इकाई 5 निर्देशन की तकनीकें

संरचना

5.1 प्रस्तावना

5.2 उद्देश्य

5.3 निर्देशन की तकनीकें

5.4 अमानकीकृत तकनीकें

- 5.4.1 प्रश्नावली
- 5.4.2 प्रेक्षण
- 5.4.3 समाजमिति
- 5.4.4 आत्मकथा
- 5.4.5 निर्धारण मापनी
- 5.4.6 वृत्तांत अभिलेख
- 5.4.7 व्यक्ति अध्ययन (केस अध्ययन)
- 5.4.8 संचयी वृत्त
- 5.4.9 साक्षात्कार

5.5 मानकीकृत तकनीकें

- 5.5.1 अभिक्षमता परीक्षण
- 5.5.2 उपलब्धि परीक्षण
- 5.5.3 अभिरुचि तालिका
- 5.5.4 व्यक्तित्व परीक्षण

5.6 सारांश

5.7 अभ्यास कार्य

5.1 प्रस्तावना

बच्चे आनुवंशिक गुणों से समन्वित होने के कारण अपने अन्दर वृद्धि, विकास तथा अधिगम की मानवीय संभावनाओं को लेकर संसार में आते हैं। आपको माता-पिता अथवा अध्यापक के रूप में ऐसा स्वर्णिम अवसर मिलता है जब आप प्रौढ़ दल के अंग बनकर होनहार बच्चों के साथ क्रिया-प्रतिक्रिया करते हुए उनके अंदर मानवीय संभावनाओं के विकास को सावधानी और विचारपूर्वक निर्देशन की प्रविधियों के प्रयोग से गति देते हैं। यदि प्रत्येक बच्चे में निहित शक्ति का परिपूर्ण विकास करना है और मानव जीवन की पूर्ण गुणवत्ता से बच्चों को समुन्नत करना है तो बालक की प्रकृति प्रदत्त शक्तियों के विकास के लिए समृद्ध परिवेश एवं सुविचारित पालन-पोषण तथा निर्देशन की नितांत आवश्यकता है।

मानवीय संभावनाओं के विकास के लिए शिक्षाशास्त्रियों ने निर्देशन को एक उपाय के रूप में अंगीकार किया है। बालक अपने अध्यापक से न केवल किसी विषय के ज्ञान पर अधिकार करना सीखता है, अपितु वह समुचित जीवन मूल्यों, अभिवृत्तियों तथा आदतों का विकास करना भी सीखता है।

5.2 उद्देश्य

इस इकाई को पढ़ लेने के बाद आप इस योग्य हो जाएंगे कि :

- 'निर्देशन की तकनीक' शब्द की व्याख्या कर सकेंगे;
- निर्देशन की दो प्रमुख तकनीकों का विवेचन कर सकेंगे;
- निर्देशन की मानकीकृत तथा अमानकीकृत विभिन्न तकनीकों की सूची बना सकेंगे;
- निर्देशन की मानकीकृत तथा अमानकीकृत तकनीकों की पहचान कर सकेंगे;
- शिक्षा में निर्देशन की तकनीकों का विवेचन कर सकेंगे।

5.3 निर्देशन की तकनीकें

निर्देशन एक ऐसी सहायता है जो एक व्यक्ति द्वारा दूसरे व्यक्ति को वरण करने, समायोजन करने तथा समस्याओं के समाधान करने में दी जाती है। निर्देशन का लक्ष्य निर्देशन प्राप्तकर्ता में स्वावलम्बन तथा स्वातंत्र्य की योग्यता का विकास करना है जिससे वह अपने दायित्व का निर्वहन कर सके। यह एक सार्वभौम सेवा है। यह केवल विद्यालय या परिवार तक ही सीमित नहीं है। इसका विस्तार जीवन के प्रत्येक पक्ष तक है, चाहे वह घर, व्यापार तथा उद्योग हो या सरकार, सामाजिक जीवन, चिकित्सालय अथवा कारागृह ही क्यों न हो। वस्तुतः इसकी उपस्थिति उन सभी स्थानों पर होती हैं जहाँ सहायता के लिए व्यक्ति तत्पर हों।

निर्देशन प्राप्त करने वाले व्यक्ति से संबंधित मूलभूत आँकड़ों/ सूचनाओं के संकलन के लिए निर्देशक जो तकनीकें अपनाता है, वे या तो मानकीकृत होती हैं अथवा अमानकीकृत। अमानकीकृत तकनीकें - साक्षात्कार निर्धारण मापनी, प्रश्नावली, प्रेक्षण, समाजमिति, आत्मकथा, संचयीवृत्त तथा वृत्तांत अभिलेख। मानकीकृत तकनीकें हैं - अभिरुचियों, बुद्धिमत्ता, अभिक्षमताओं तथा व्यक्तित्व-विशेषकों के परीक्षण के उपकरण। बुनियादी आँकड़े प्राप्त करने को लिए इन दोनों प्रकार की तकनीकें का उपयोग किया जाता है। ये सभी तकनीकें उपयोगी हैं। इन तकनीकें का उपयोग करते समय निर्देशक को यह सावधानी बरतनी चाहिए कि ये तकनीकें विश्वसनीय और प्रमाणिक सूचनाएँ देने में सक्षम हों। बुद्धिमत्ता, अभिरुचियों और अभिवृत्तियों का मापन करने वाले मानकीकृत परीक्षण यों तो विश्वसनीय और प्रामाणित सूचना देने वाले होते ही हैं, साथ-साथ इनका बार-बार उपयोग किया जा सकता है। यही नहीं, ये अल्पसमय साध्य होते हैं तथा इनका अंकन आसानी से किया जा सकता है। मनुष्यों के अध्ययन में प्रयुक्त अमानकीकृत तकनीकें भी काफी सहायक होती हैं। कभी-कभी ऐसा भी होता है कि मानकीकृत तकनीकें द्वारा प्रदत्त सूचनाओं की अपेक्षा अमानकीकृत तकनीकें द्वारा प्राप्त सूचनाएँ अपेक्षाकृत अधिक काम की होती हैं। उदाहरण के लिए, अमानकीकृत तकनीक के रूप में प्रयुक्त आत्मकथा व्यक्ति की आशाओं, आकांक्षाओं तथा उनकी संवेगात्मक समस्याओं को समझने की अंतर्दृष्टि तथा अन्य उपयोगी सूत्र प्रदान करती है। इसी प्रकार केस-अध्ययन-तकनीक के लिए समग्र व्यक्ति को समझने में उपबोधक अधिक उपयोगी सिद्ध होती है। साक्षात्कार तकनीक तो उपबोधन की तकनीक प्रविधि है। किसी भी तकनीक के उपयोग की सार्थकता इस बात पर निर्भर करती है कि निर्देशनकर्त्ता को उसके उपयोग से क्या अभीष्ट है।

5.4 अमानकीकृत तकनीकें

उपबोधक अमानकीकृत प्रविधियों का उपयोग विभिन्न परिस्थितियों में व्यक्तिगत विश्लेषण करने के लिए सामान्यतया किया करता है। इन तकनीकों से व्यापक, परिवर्ती तथा व्यक्तिनिष्ठ प्रणाली द्वारा आँकड़ों/ सूचनाओं का संकलन करके मानवीय मूल्यांकन की व्याख्या करना सुगम होता है। निर्देशनकर्त्ताओं द्वारा विभिन्न प्रकार की अमानकीकृत तकनीकों का प्रयोग किया जाता है। अब हम निर्देशन की विभिन्न अमानकीकृत तकनीकों का विवेचन करेंगे।

5.4.1 प्रश्नावली

प्रश्नावली प्रश्नों की एक ऐसी लंबी सूची होती है जो विशेष रूप से तथ्यों और सूचनाओं को प्राप्त करने के उद्देश्य से एक या एकाधिक व्यक्तियों को देकर उसके आधार पर उनसे उत्तर प्राप्त करने के लिए प्रयुक्त होती है। प्रश्नावली पर्याप्त व्यापक होनी चाहिए ताकि अन्य तकनीकों से भी इसका मिलान किया जा सके। प्रश्नों की रचना स्थितियों तथा क्रियाओं के संबंध में सूचनाएँ प्राप्त करने की दृष्टि से यह मानकर की जाती है कि उत्तरदाता उनसे भलीभाँति अवगत होगा। प्रश्नावली में मूल रूप से दो प्रकार के प्रश्न रखे जाते हैं : एक, बंद या संरचित प्रश्न, दूसरे, खुले या असंरचित प्रश्न। खुले रूप वाले प्रश्नों का उत्तर देते समय व्यक्ति सोचता है और लिखता है। यथा, आपका प्रिय खेल कौन-सा है? बंद रूप वाले प्रश्नों का उत्तर 'हाँ' या 'ना' अथवा दी हुई श्रेणियों में से चुनकर सीमित ढंग से दिया जाता है। खुले रूप वाले प्रश्नों के उत्तर देना अपेक्षाकृत अधिक समय-साध्य है तथा प्राप्त उत्तरों की व्याख्या करने के लिए विशेष योग्यता की अपेक्षा रहती है। संवृत प्रश्नों का अंकन और उसकी व्याख्या आसानी से हो सकती है तथा वह अधिक वस्तुनिष्ठ है।

निर्देश

8. यदि आपका सातवें प्रश्न का उत्तर 'हाँ' में नहीं है तो भाग चार के प्रश्न पाँच के उपभाग D-II की ओर आगे बढ़िए अन्यथा भाग दो के प्रश्न तीन के उपभाग E-I की ओर बढ़िए।

9. यदि आठवें प्रश्न का उत्तर 'ना' में था तो अगले भाग की ओर न बढ़ें। उसकी अपेक्षा 8 (3) - B का उत्तर विस्तार से दें। यदि आवश्यक समझें तो अतिरिक्त पृष्ठ जोड़ दें।

1. संवृत प्रश्न

   - लिंग [ ] पुल्लिंग/ स्त्रीलिंग
   - आप दूरदर्शन का 'डिस्कवरी चैनल' कितनी बार देखते हैं?

     नियमित/ अधिकतर/ कभी-कभी/ कभी नहीं

2. मुक्तोत्तर प्रश्न

   - आप किस प्रकार के कार्यक्रम देखना पसंद करते हैं?
   - आप अपने विद्यालय में विज्ञान शिक्षण में सुधार लाने के लिए क्या उपाय करेंगे?

प्रश्नों की संख्या कम हो तथा समझने एवं उत्तर देने में वे सरल होने चाहिए। उनमें सभी सूचना-बिंदु आ जाने चाहिए।

इस तकनीक की अपनी कुछ सीमाएँ हैं, तथापि तथ्यात्मक आँकड़ें प्राप्त करने के लिए इसका बहुधा उपयोग किया जाता है।

5.4.2 प्रेक्षण

इस तकनीक के द्वारा प्रशिक्षित प्रेक्षक किसी के व्यवहार का प्रेक्षण करके उसका अध्ययन करता है। प्रेक्षक की दक्षता पर ही इस तकनीक की सार्थकता निर्भर करती है। प्रेक्षक से अपेक्षा की जाती है कि वह आग्रह और दुराग्रह से मुक्त रहकर व्यवहारों के निश्चित स्वरूपों का निरीक्षण करे।

प्रेक्षण तकनीक छात्रों और व्यक्तियों के अध्ययन के लिए उपयुक्त है। किंतु उसकी सफलता और उपयोगिता इस बात पर निर्भर करती है कि प्रेक्षक ने उसका उपयोग किस प्रकार से तथा किस उद्देश्य को ध्यान में रखकर किया है।

5.4.3 समाजमिति

इस तकनीक का प्रयोजन समूह में व्यक्ति विशेष के सामाजिक संबंधों का अध्ययन करना है। इसके द्वारा विशेष रूप से एकाकी और उपेक्षितों तथा अस्वीकृत व्यक्तियों की व्यक्तित्व संबंधी समस्याओं का पता लगाने का अवसर प्राप्त होता है। छात्रों के सामाजिक व्यवहार का आकलन करने हेतु यह तकनीक सूचना प्राप्त करने का एक उपयोगी स्रोत है।

समाजमिति तकनीकों के प्रायः तीन प्रकार होते हैं।•(i) मनोनयन (ii) सामाजिक स्वीकरण (iii) 'कौन क्या' या 'अनुमान लगाइए कौन?'। नामांकन तकनीक में छात्र से अध्यापक द्वारा निर्दिष्ट विशिष्ट कसौटी के संदर्भ में अपने साथी का चयन कर नामित करने को कहा जाता है। उदाहरणार्थ अध्यापक छात्र से अपनी कक्षा के तीन सबसे अच्छे मित्रों के नाम बताने वाला प्रश्न कर सकता है। सामाजिक स्वीकरण तकनीक में सामाजिक संबंधों के स्तरों का उल्लेख करते हुए छात्र समाजमिति में अपनी पसंद व्यक्त करता है। 'अनुमान लगाइए' प्रविधि के अंतर्गत विभिन्न प्रकार के छात्रों का संक्षिप्त विवरण दिया जाता है। फिर छात्र से पूछा जाता है कि विवरण के आधार पर मिलान करते हुए वह यह अनुमान लगाए कि कक्षा में से कौन-सा छात्र उस विवरण से मेल खाता है। उदाहरण के लिए, एक कथन इस प्रकार हो सकता है - अपने माता-पिता के साथ बालक की कभी नहीं बनती - वह कौन है?

समाजमिति के आँकड़ों को समाज-आलेख के रूप में दर्शाया जाता है, जिससे समूह के अंतर्गत उस व्यक्ति का कितना आकर्षण या अनाकर्षण है, यह ज्ञात होता है। इसके द्वारा अध्यापक और उपबोधक को छात्रों की समस्याओं का समूह के संदर्भ में पता लगाने में सहायता मिलती है।

5.4.4 आत्मकथा

आपने कई महान व्यक्तियों की आत्मकथाएँ पढ़ी होंगी। उनमें से कुछ हैं - महात्मा गांधी की 'सत्य के प्रयोग' नामक आत्मकथा तथा नीरद सी. चौधरी द्वारा लिखित 'एक अज्ञात भारतीय की आत्मकथा।' आत्मकथा किसी व्यक्ति का अपने शब्दों में आत्म विवरण होता है। व्यक्ति का अध्ययन करने में प्रयुक्त निर्देशन तकनीक के रूप में आत्मकथा व्यक्ति विशेष की अभिरुचियों, योग्यताओं, व्यक्तिगत इतिहास, आशाओं, अभिलाषाओं, पसंद-नापसंद इत्यादि के संबंध में मूल्यवान सूचनाएँ प्रदान करती है। निर्देशन के अंतर्गत व्यक्ति विशेष की आत्मकथा के कुछ संरचित बिंदुओं को देकर उनके संबंध में लिखने को कहा जाता है। आत्मकथा संबंधी उपलब्ध सामग्री की जाँच दूसरे कई अन्य उपायों से भी की जा सकती है। चूँकि भावनाओं, मूल्यों तथा अभिवृत्तियों का परीक्षण किसी अन्य तकनीक द्वारा संभव नहीं है, अतः उपर्युक्त विशेष गुणों का आकलन करने के लिए आत्मकथा ही उपयुक्त तकनीक प्रतीत होती है।

5.4.5 निर्धारण मापनी

इस तकनीक द्वारा किसी व्यक्ति के व्यवहार विशेष में गुणों की उपस्थिपि अथवा अभाव का मापन मात्रात्मक और गुणात्मक आधार पर किया जाता है। आप अपने दैनिक अध्यापन कार्य में अपने छात्रों के कार्य-निष्पादन, हस्तलेख, आदतों तथा अन्य बहुत से पक्षों को माप कर उनकी योग्यता का क्रम निर्धारण करते रहते होंगे। उदाहरण के लिए, गणित विषय में अशोक ने मीना की अपेक्षा अधिक प्रगति की है, किंतु हिंदी विषय में मीना ने सर्वाधिक अंक प्राप्त किए हैं। श्याम की अपेक्षा राम लंबा है, किंतु नीतेश रमेश की अपेक्षा श्याम से अधिक लम्बा है। 'क्रम या योग्यता निर्धारण' से तात्पर्य है कि हम किसी के बारे में निर्णय ले रहे हैं या किसी चीज़ के मूल्य का आकलन कर रहे हैं। मूल्यांकनकर्त्ता ने व्यक्ति का विभिन्न परिस्थितियों का कई बार अवलोकन किया है, अतः वह उसके बारे में अपना निर्णय देता है। क्रम या योग्यता निर्धारण योजना के अंतर्गत प्रत्येक छात्र को एक जैसी कसौटी पर कसकर उसके बारे में निर्णय दिया जाता है और तब अपने अभिमतों को एक मापनी पर निर्देशित बिंदुओं में 'अत्यधिक कमजोर/कमजोर/सामान्य/अच्छा/बहुत अच्छा' जैसे मापनी बिंदुओं पर कहीं अंकित किया जाता है। सुविधा तथा वैषम्य की दृष्टि से इन निर्णयों को ग्राफों के माध्यम से प्रोफाइल पर दर्शाया जाता है।

निर्धारण मापनी की परिभाषा

निर्धारण मापनी शब्दों, वाक्यांशों, वाक्यों, परिच्छेदों की ऐसी चयनित सूची होती है जिसके आधार पर प्रेक्षक मूल्यों के वस्तुनिष्ठ मापन पर आधारित किसी मूल्य अथवा माप को अभिलेखित करता है। यह एक विशेष प्रकार की जाँच-सूची होती है, जिसमें जाँच की गई विशेषताओं या गुणों की उपस्थिति अथवा उनके अभाव का गुणात्मक या संख्यात्मक निर्धारण किया जाता है अथवा कौशल की मात्रा अथवा पूर्णता या कार्य के सम्पन्न होने की मात्रा का निर्धारण किया जाता है।

निर्धारण मापनी की प्रक्रिया

निर्धारण मापनी में प्रदत्त अंकों या ग्रेड के आधार पर विशेषताओं का निर्धारण किया जाता है। उदाहरणार्थ, किसी व्यक्ति के लिए अजनबी से मिलना एक गंभीर समस्या हो सकती है और दूसरे व्यक्ति के लिए इसमें किसी प्रकार की समस्या नहीं होती। इन दो आत्यंतिक स्थितियों में एक व्यक्ति से दूसरे की तुलना करें तो उनकी समस्या की गंभीरता का स्तर भिन्न-भिन्न हो सकता है। उस स्तर का निर्धारण गुणात्मक या मात्रात्मक दोनों प्रकार से किया जा सकता है। उदाहरण के लिए, समस्या की गंभीरता का मापन निम्नलिखित ढंग से संभव हो सकता है :

गुणात्मक मापन	मात्रात्मक मापन	श्रेणी/ग्रेड
समस्या कभी नहीं	0	E
समस्या कभी-कभी	1	D
समस्या किसी समय विशेष पर	2	C
समस्या कुछ-कुछ गंभीर	3	B
समस्या अतिगंभीर	4	A

कुछ ऐसी विशेष परिस्थितियाँ, जिनमें निर्धारण मापनी का प्रयोग किया जाता है, अधोनिर्दिष्ट है। ये ऐसी परिस्थितियाँ हैं, जब शैक्षिक या व्यावसायिक निर्देशन चाहने वाले व्यक्तियों के लिए कोई अन्य तकनीक इतनी विश्वसनीयता तथा वैधता युक्त मापन करने में सक्षम नहीं होती :

1. ऐसे क्षेत्र जिनका मापन वस्तुनिष्ठ ढंग से संभव न हो, निर्धारण मापनी प्रविधि से उनका मात्रात्मक मूल्यांकन आसानी से किया जा सकता है।

2. मानकीकृत मनोवैज्ञानिक परीक्षणों के द्वारा संकलित सूचनाओं के पूरक के रूप में निर्धारण मापनी का उपयोग किया जाता है। मान लें, कक्षा के छात्रों का उपलब्धि परीक्षण करना है। इससे संबंधित दिए गए प्रश्न-पत्र के जो परिणाम मिलेंगे उनकी प्रतिपुष्टि निर्धारण मापनी के परिणामों से की जा सकती है।

3. जब ऐसी स्थितियाँ हों कि निर्देशक बहुत सी चीज़ों के संबंध में तथा बहुत से छात्रों के संबंध में थोड़े समय में सूचनाएँ एकत्र करना चाहे, तब अध्यापक का निर्धारण मापन उपयोगी हो सकता है।

4. ऐसी परिस्थितियाँ हों, जहाँ व्यक्ति विशेष के अध्ययन हेतु मानकीकृत उपकरणों का निर्माण विशेष/अभिज्ञता, धन और समय-साध्य हो, ऐसे अवसरों पर निर्धारण मापनी तकनीक से सूचनाएँ प्राप्त की जा सकती हैं। तब इस प्रविधि का निर्माण करना अपेक्षाकृत सरल होगा।

5. निर्देशन और उपबोधन में समस्याग्रस्त व्यक्ति द्वारा आत्म-विश्लेषण तथा आत्म-मूल्यांकन अपेक्षित है। आत्म-विश्लेषण के लिए स्वयं अपना मापन कर सूचनाएँ प्राप्त करना उपयोगी होता है। अपनी जाँच स्वयं करने से स्वयं को भलीभाँति समझा जा सकता है।

निर्धारण मापनी की सीमाएँ

1. चूँकि निर्धारण मापनी एक प्रेक्षणपरक तकनीक है इसलिए अन्य प्रेक्षण तकनीकों की ही भांति यह भी कई दोषों से युक्त है। निर्धारण मापनी के द्वारा जो आँकड़े प्राप्त होते हैं वे तब तक भरोसा करने लायक नहीं होते जब तक निर्धारक मापन के उद्देश्य को स्पष्ट रूपेण न समझता हो।

2. निर्धारण मापनी तकनीक का प्रयोग करने के लिए प्रेक्षक में विशेष दक्षता तथा बोध की आवश्यकता है। इस कार्य के लिए हर कोई व्यक्ति उपयुक्त नहीं होता।

3. कुछ मापनकर्त्ताओं का मापन कार्य बहुत हल्के स्तर का होता है तो कुछ का बहुत उच्च स्तर का। यदि उचित सावधानी बरती जाए तो यह कमी दूर की जा सकती है।

निर्धारण मापनी के प्रकार - बहुधा प्रयुक्त होने वाली कुछ निर्धारण मापनियाँ हैं : (क) विवरणात्मक, (ख) रेखाचित्रीय (ग्राफिक), (ग) बाधितवरण (घ) कोटिक्रम और (ड़) युग्मित तुलना

(क) **विवरणात्मक निर्धारण मापनी** : यह व्यक्तित्व के गुणों, अभिवृत्तियों अथवा व्यक्ति के व्यवहार मापन के लिए प्रयुक्त होती है। किसी व्यक्ति के व्यवहार के मापन के लिए काम आने वाली विवरणात्मक निर्धारण मापनी का आगे एक उदाहरण प्रस्तुत है। प्रथम स्तम्भ में ऐसे कई वाक्यांश हैं जो सहायता संबंधी विभिन्न मात्राओं को दर्शाते हैं। वे आरोही या अवरोही क्रम से रखे गए हैं।

	सदा	सामान्यतः	यदाकदा	कभी नहीं
i) दूसरों के लिए सहायक	....	....	....	....
ii) जो कुछ कहा जाए उसे ही करता है	....	....	....	....
iii) नई चीज़ें करना चाहता है	....	....	....	....
iv) सैर-सपाटे पर जाना पसंद है	....	....	....	....

वास्तविक जीवन-व्यवहार का क्रमबद्ध आकलन करने के लिए प्रयुक्त निर्धारण मापनी का यह एक उदाहरण है। इसमें मापनकर्त्ता उन वाक्यांशों का चयन करता है जो विचाराधीन गुणों के निकटवर्ती हैं अथवा उन पर लागू होते हैं।

(ख) **रेखाचित्रीय (ग्राफिक) निर्धारण-मापनी** : इस मापनी में संक्षिप्त विवरण द्वारा किसी गुण की मात्राओं का निर्धारण करने का प्रयास किया जाता है। व्यक्ति के अंदर किसी गुण की उपस्थिति को दर्शाने के लिए पंक्ति 3, 5 या 7 बिंदुओं में विभाजित की गई है।

किसी प्रयास की सघन रूप से क्रियाशीलता का मापन करने वाली रेखाचित्रीय निर्धारण मापनी का एक उदाहरण नीचे प्रस्तुत है :

1	2	3	4	5
थोड़ी सी कठिनाई आने पर ही प्रयास छोड़ देता है।	कठिनाइयाँ उपस्थित होने पर कुछ प्रयास करने के बाद आगे प्रयास करना छोड़ देता है।	पहले सभी संभव प्रयत्न करना तो चाहता है पर बाद में उन्हें छोड़ देता है।	निरंतर असफलताएँ आने पर भी प्रयास करता रहता है।	प्रयत्न करना कभी नहीं छोड़ता। तब तक पीछा करता रहता है जब तक लक्ष्य प्राप्त नहीं हो जाता।

अध्यापक उस वाक्यांश को चिह्नित कर देता है जो छात्र में विद्यमान गुण का सूचक हो। यदि आवश्यक हो तो जाँच का चिह्न भी साथ ही अंकित कर दिया जाता है।

(ग) **बाधितवरण विधि :** यह विधि मापनकर्त्ता को दो विकल्पों में से किसी एक का चयन करने के लिए बाध्य करती है। यद्यपि दोनों विकल्प लगभग एक जैसे प्रतीत होते हैं, तथापि केवल एक कथन किसी गुण के होने या न होने को परिलक्षित करता है। इस प्रकार के कई युग्म कथनों को दर्शाया जाता है और मापनकर्ता प्रत्येक युग्म में से कोई एक या दो विकल्प चुनता है।

जब मापनकर्त्ता A या B का चयन करता है तो उसकी वास्तविक इच्छा का पता चल जाता है।

(घ) **युग्मित तुलनात्मक निर्धारण मापनी :** यह मापनी एक संदर्भ बिंदु के रूप में प्रयुक्त होती है। मापन करने योग्य कुछ विशेष प्रकार के छात्रों को छाँटकर उनमें परस्पर तुलना की जाती है। इसका एक उदाहरण यहाँ प्रस्तुत है : शशि, प्रभा तथा रोशन तीनों विशेष प्रकृति वाले छात्र हैं। पहला छात्र लोगों की बहुत अधिक सहायता करता रहता है, दूसरा कभी सहायता करता है, कभी नहीं करता पर तीसरा ऐसा छात्र है जो दूसरों के साथ कभी सहयोग नहीं करता। यहाँ सहयोग के जिस गुण का मापन किया गया है, वह उसकी मात्रा का मापन है।

कभी सहयोग नहीं करता	सहयोग करता है	सहयोगा करने के लिए सदा तत्पर रहता है
जैसे रोशन	जैसे प्रभा	जैसे शशि

(ड.) **कोटिक्रम विधि :** इस विधि के अंतर्गत छात्रों को पढ़ाने वाले कई अध्यापकों द्वारा अलग-अलग करके छात्रों के समूह को किसी गुण विशेष के अनुसार श्रेणीबद्ध किया जाता है। इसके पश्चात् प्रत्येक छात्र की सामान्य श्रेणी निर्धारित कर ली जाती है।

बोध प्रश्न

टिप्पणी : क) अपने उत्तरों के लिए नीचे दिए गए स्थान का प्रयोग कीजिए।

ख) इस खंड के अंत में दिए गए उत्तरों से अपने उत्तर मिलाइए।

1. निर्धारण मापनी की किन्हीं तीन कमियों को सूचीबद्ध कीजिए।

....

....

....

....

....

2. निर्धारण मापनी कितने प्रकार की हो सकती है? उनमें से किसी एक का संक्षेप में वर्णन कीजिए।

....

....

....

....

....

5.4.6 वृत्तान्त अभिलेख

हर छात्र के जीवन में कई घटनाएँ घटती रहती हैं। अध्यापक की दृष्टि में जो घटना या घटनाएँ महत्वपूर्ण होती हैं, वह उनका संक्षिप्त विवरण/ ब्यौरा लिखता रहता है। इस प्रकार की महत्वपूर्ण घटनाओं के संकलित विवरण को ही जीवन वृत्तांत अभिलेख कहते हैं।

छात्र के व्यवहार की किसी एक घटना के प्रेक्षण जन्य वृत्तांत-विवरण की तुलना कैमरे से खींचे गए आशु चित्र से की जा सकती है। यह घटना उसके व्यवहार की किसी एक प्रमुख विशेषता को दर्शाने वाली होती है। जिस प्रकार कैमरा किसी निश्चित समय पर व्यक्ति की छवि को अपने अंदर समाहित कर एक चित्र के रूप में प्रस्तुत कर देता है उसी प्रकार वृत्तांत-अभिलेख में भी व्यक्ति के प्रेक्षित किसी व्यवहार विशेष का वास्तविक चित्र प्रकट होना चाहिए। यदि हम निर्देशन के आधारभूत सिद्धांत के रूप में व्यक्ति की अद्वितीयता और अनोखेपन को अंगीकार करते हैं तो निर्देशन-कार्य के लिए आशु चित्र शब्द हमारे लिए बहुत अधिक महत्वपूर्ण है। किसी भी व्यक्ति का व्यवहार सदा ही उसकी अनुभूत आवश्यकता के प्रत्युत्तर के रूप में दृष्टिगोचर होता है। उदाहरणार्थ, स्नेह की इच्छा अथवा सुरक्षा का भय उपस्थित होने पर व्यक्ति विशेष प्रकार के अजीब-अजीब व्यवहार करने की ओर प्रवृत्त हो जाता है। अध्यापक को चाहिए कि वह ऐसे व्यवहारों को तुरंत लिपिबद्ध कर ले, अर्थात् शब्दों के रूप में उसके आशु चित्र खींचता रहे।

शब्दों में प्रकट हुए इस प्रकार के शब्द आशु चित्र उन सभी अध्यापकों द्वारा संकलित किए जाते रहने चाहिए जो किसी छात्र विशेष के सम्पर्क में विभिन्न परिस्थितियों में निरंतर आते रहते हैं। इन परिस्थितियों में उनके द्वारा छात्र के व्यवहारों का अंकन ही उस छात्र के व्यक्तित्व अथवा उसकी व्यवहार-सारणी का यथार्थ चित्र प्रस्तुत कर सकता है।

जितने अध्यापक उस अध्येता के संपर्क में आते हैं इनके द्वारा यथासंभव अधिकाधिक परिस्थितियों में आलेखित शब्द चित्र अध्येता की व्यवहार पद्धति अथवा उसके व्यक्तित्व का वास्तविक चित्र प्रस्तुत करते हैं।

वृत्तांत अभिलेखों का आलेखन : किसी विशेष परिस्थिति में किए गए किसी छात्र के विशेष प्रकार के व्यवहार का अध्यापक द्वारा प्रेक्षण/ अवलोकन के आधार पर एकत्रित किया गया ब्यौरा जीवन वृत्तांत अभिलेख कहलाता है। छात्र के व्यवहार का लेखा-जोखा अध्यापक लिपिबद्ध कर लेता है अन्यथा कालान्तर में वह विस्मृत हो सकता है। लिखकर रखने से उसके स्मृतिगम्य बने रहने में सुगमता रहती है। अध्यापक जो कुछ भी अवलोकन करता है उसी को लिपिबद्ध कर लेता है। वह उसके संबंध में अपनी कोई टिप्पणी नहीं देता। वह व्यवहार का विवरण प्रस्तुत कर सकता है तथा अपने अभिमत की अभिव्यक्ति विशेष उल्लेख के रूप में कर सकता है। अथवा वह व्यवहार का विवरण प्रस्तुत करते हुए संभावित उपचारात्मक उपायों का उल्लेख कर सकता है।

किन बातों का प्रेक्षण किया जाए?

प्रत्येक अध्यापक को अपने प्रेक्षणों को लिपिबद्ध करने हेतु एक प्रारुप-प्रपत्र दिया जाता है। इस प्रपत्र में दिए होते हैं – दिनांक, स्थान, घटना तथा विवरण के लिए स्थान। अध्यापकों को इस प्रकार के निर्देश होते हैं कि वे बालक के व्यवहार को स्पष्टता से अंकित करें। उनका अभिकथन विवरणात्मक तथा स्पष्ट शब्दों में हो। उसमें अस्पष्ट टिप्पणी न दी जाए। जो भी विवरण दिया जाए वह घटित घटना का यथातथ्य उल्लेख होना चाहिए। जैसे, कल अनुपस्थित रहा जिसका कोई कारण नहीं बताया और आज आधा घंटा विलम्ब से आया, निर्देशों का पालन नहीं किया, या आदेश की अवहेलना की, आदि-आदि।

लिपिबद्ध किए जाने वाले विषय-क्षेत्र : इधर-उधर की छिट-पुट सूचनाओं को असम्बद्ध रीति से लिपिबद्ध करने से कोई प्रयोजन सिद्ध नहीं होता। अतएव प्रदत्त प्रपत्र में विषय-दोष संबंधी बिंदु निर्दिष्ट किए होते हैं। - तद्नुसार निरीक्षण किया जाना चाहिए। वृत्तांत अभिलेख एक उद्देश्यपूर्ण अभिलेख होता है। उदाहरण के लिए, किसी बालक में औद्योगिक कार्य संबंधी रुचि का प्रदर्शन स्थानीय प्रतिष्ठान/ संयंत्र के अवलोकन पर लिखे गए लेख द्वारा हो सकता है। किसी बालिका की साहित्यिक अभिरुचि की पहचान उसके द्वारा साहित्यिक पत्रिका में लिखे गए लेख से हो

सकती है। जागरूक अध्यापक को चाहिए कि वह अपने छात्रों के इस प्रकार के घटनाक्रमों पर ध्यान देते हुए उन्हें लिपिबद्ध करता रहे। उदाहरण के लिए, यदि कोई बालक आकाशवाणी के समाचार-प्रसारण पर अपनी कोई टिप्पणी करता है तो यह घटना वृत्तांत अभिलेख का अच्छा विषय है। इसके द्वारा उस बालक का वर्तमान इतिहास के प्रति रुझान स्पष्ट होता है। इसी तरह, किसी नूतन वैज्ञानिक आविष्कार पर की गई बालक की टिप्पणी से उस बच्चे की विज्ञान संबंधी अभिरुचि का पता चलता है। इस प्रकार वृत्तांत अभिलेख छात्र के सामाजिक और संवेगात्मक व्यवहार को समझने में विशेष भूमिका अदा करता है। मान लो, यदि कोई बच्चा उस समय एकाकी और गुमसुम बैठा है, जब उसके अन्य साथी छुट्टी के दिन सैर-सपाटे के अवसर पर प्रफुल्लित होकर हाहा-हीही कर रहे हैं, तो उसके व्यवहार से यह ध्वनित होता है कि उसके अंतर्मन में कुछ-न-कुछ संवेगात्मक समस्याएँ हैं।

अनुदैर्ध्य उपागम (Longitudinal approach)

केवल वे ही वृत्तांत अभिलेख निर्देशन सेवा कर्मी के कुछ काम के हो सकते हैं जिनमें व्यक्ति विशेष के व्यवहारों का उल्लेख दीर्घकालिक अवधि तक किया गया हो। दीर्घकालिक-वृत्तांत अभिलेख नर्सरी विद्यालय से लेकर माध्यमिक विद्यालय तक संरक्षित रहें तो बहुत उपयोगी सिद्ध होंगे।

वृत्तांत अभिलेख संचिका में अनावश्यक सामग्री का समावेश नहीं होना चाहिए। समय-समय पर संचिका की जाँच-पड़ताल करके अनावश्यक सामग्री उसमें से अलग कर देनी चाहिए। जीवन के सभी पक्षों से संबंधित वृत्तांत अभिलेख लिखे जाने चाहिए।

विद्यालय के सभी अध्यापकों को ये प्रपत्र दिए जाने चाहिए, जिसमें जब जो घटनाएँ हुई हों, उनका वे उल्लेख कर सकें। इसके लिए कुछ प्राथमिक विचारणीय बातें ध्यान देने योग्य हैं। इनका उल्लेख नीचे किया जा रहा है :

1. प्रपत्र संक्षिप्त तथा अनौपचारिक होना चाहिए।
2. समूह अथवा व्यक्ति की मानक प्रवृत्ति में दिखाई पड़ने वाली महत्वपूर्ण घटनाक्रमों का ही आलेखन किया जाए।
3. सभी छात्रों के वृत्तांत अभिलेख तैयार करने चाहिए। केवल कुछ आदर्श अथवा समस्या प्रधान यानी कुछ विचित्र प्रकार के छात्रों का ही वृत्तांत अभिलेख तैयार नहीं करना चाहिए।
4. घटना घटित होने के तुरंत बाद उसे लिख लिया जाए। जो लिखा जाए वह वास्तविक प्रेक्षण पर आधारित हो।
5. अकेली घटना का कोई मूल्य नहीं होता।
6. पक्षपातपूर्ण आग्रह का इसमें समावेश नहीं होना चाहिए। सकारात्मक और नकारात्मक दोनों प्रकार की घटनाओं का उल्लेख करना चाहिए।
7. हमें यह जानना चाहिए कि हमें किन बातों का प्रेक्षण करना है कहाँ किस स्थान पर निरीक्षण करना है तथा उसकी पहचान कैसे करनी है।

वृत्तांत अभिलेख के उपयोग

1. वृत्तांत अभिलेख छात्र के बारे में उपयोगी सूचना प्रदान करता है। यथा उसके व्यक्तित्व की विशेषताएँ, विभिन्न परिस्थितियों में उसकी प्रतिक्रिया, अध्ययन में उसकी अभिरुचि, व्यवसाय तथा अन्य व्यक्तियों में उसकी अभिरुचि कैसी है? ये अभिलेख छात्रों के व्यक्तित्व का यथार्थ चित्र प्रस्तुत करते हैं।
2. सामाजिक और संवेगात्मक परिस्थितियों को इंगित करने में वृत्तांत अभिलेखों का विशेष महत्व है।

3. जिन क्षेत्रों में औपचारिक मापन करना बहुत कठिन होता है वहाँ साधन के रूप में वृत्तांत अभिलेख बहुत उपयोगी सिद्ध होते हैं। उदाहरण के लिए - सामाजिक मिलनशीलता की जाँच करने, सामाजिक सजगता को परखने, सामाजिक व्यवहार, अभिवृत्ति, व्यक्तिगत उत्तरदायित्व की स्वीकृति तथा कार्य की आदतों को समझने में वृत्तांत अभिलेख ही सहायक होते हैं।

4. विद्यालय-व्यवस्था जब अध्यापकों को छात्रों के वृत्तांत अभिलेख तैयार करने का दायित्व सौंपती है तब अध्यापक और छात्रों के मध्य स्वस्थ एव मधुर संबंध स्थापित हो जाते हैं।

5. यदि वृत्तांत-अभिलेखों को व्यवस्थित ढंग से रखा जाए तो इससे उपबोधक को अत्यधिक बहुमूल्य सूचनाएँ प्राप्त होती हैं।

बोध प्रश्न

टिप्पणी : क) अपने उत्तरों के लिए नीचे दिए गए स्थान का प्रयोग कीजिए।

ख) इस खंड के अंत में दिए गए उत्तरों से अपने उत्तर मिलाइए।

3. छात्रों के वृत्तांत अभिलेख तैयार करते समय आप जिन बातों का विशेष ध्यान रखेंगे उनमें से किन्हीं चार बातों का उल्लेख कीजिए।

....

....

....

....

....

5.4.7 व्यक्ति अध्ययन (केस अध्ययन)

केस अध्ययन में उन सभी उपलब्ध सूचनाओं का संकलन होता है जिनके आधार पर किसी एक व्यक्ति की व्याख्या करने में सहायता मिलती है। ये सूचनाएँ हैं - सामाजिक, शारीरिक, जीवनगत, परिवेशगत, व्यावसायिक आदि। आँकड़ों के संकलन के लिए उपलब्ध सभी उपकरणों और तकनीकों की सहायता से सूचनाओं का समीकृत संकलन व्यक्ति अध्ययन कहलाता है। समग्र व्यक्ति का अध्ययन करने की यह सर्वोत्तम तकनीक तथा अत्यंत महत्वपूर्ण तकनीक है। इसका उद्देश्य है कि आत्मविश्वास के साथ और निश्चयात्मक रूप से यह दावा किया जा सके कि यथासंभव सूचना के सभी स्रोतों का दोहन कर लिया गया है और उन स्रोतों से सभी प्रकार के आँकड़ों या कहें आधार-सामग्री का संकलन कर लिया गया है। केस अध्ययन में व्यक्ति के बारे में संकलित सूचनाएँ इस प्रकार व्यवस्थित और एकरुपता से समाहित कर दी जाती हैं कि जिस व्यक्ति का अध्ययन किया जा रहा है वह व्यक्ति गत्यात्मक रूप से एक इकाई प्रतीत होता है और ऐसा मालूम होता है कि वह व्यक्ति जिस विशेष परिवेश में रह रहा हैं, उसमें स्वयं को समायोजित करने का भरसक प्रयत्न कर रहा है। केस अध्ययन के पीछे मुख्य उद्देश्य यह है कि व्यक्ति को पूर्ण रूप से जाना जा सके।

किंतु प्रश्न यह है कि हम छात्र का प्रेक्षण क्यों करना चाहते हैं। प्रेक्षण इसलिए अपेक्षित है कि, वह छात्र कुछ समस्याग्रस्त होता है। केस अध्ययन के माध्यम से जिस समस्या का अध्ययन किया जाता है, वह समस्या केवल स्वास्थ्य की गड़बड़ी की समस्या नहीं है। स्वास्थ्य की गड़बड़ी की समस्या का स्वरूप तो चिकित्सीय सेवा में निश्चित किया जाता है और उसके कारणों की खोज भी की जाती है। ऐसी स्थिति में यह व्यक्ति की बीमारी का इतिहास होता है। किंतु शिक्षा के क्षेत्र में छात्र की जिस बीमारी का आलेख होता है वह उसकी सामाजिक और मानसिक परेशानियों

से संबंधित होती है। यहाँ भी तथ्यों का संकलन वस्तुनिष्ठता के साथ किया जाता है। किंतु बालक के विकास के संबंध में उनका विश्लेषण और विवेचन नहीं किया जाता। यहाँ छात्र का अध्ययन करते समय उसे एक सम्पूर्ण इकाई मानकर उसके संबंध में कोई धारणा निश्चित की जाती है। वह जो कुछ है, वह वैसा कैसे बन गया - इस प्रकार की व्याख्या की जाती है। उपलब्ध तथ्यों के परिप्रेक्ष्य में उस व्यक्ति के लिए क्या अच्छा रहेगा, इसका कथन उपबोधक करता है।

केस अध्ययन विधि का उपयोग केवल गंभीर समस्याओं को हल करने में ही किया जाता है। अतएव इसका क्षेत्र भी सीमित ही है। व्यक्ति अध्ययन में केवल व्यवहार के उन पहलुओं पर ही ध्यान दिया जाता है जिनमें निदान और उपचार की आवश्यकता होती है।

केस अध्ययन के पीछे एक व्यापक विकासात्मक दृष्टिकोण होता है। उपबोधक केवल समस्या के निदान और उसके उचित उपचार को सुझाने में ही रुचि नहीं लेता अपितु उसका सरोकार इस बात से भी होता है कि छात्र का विस्तृत अध्ययन इस उद्देश्य से किया जाता है कि उस छात्र का समायोजन उत्तम हो सके। उपबोधक उसके गुण-दोषों, योग्यताओं और न्यूनताओं का आकलन करके छात्र के विकास के संभावित उपायों तथा उसकी उपयुक्त ढंग से अभिवृद्धि की प्रणालियों की योजना तैयार कर सकता है।

व्यक्ति अध्ययन में संग्रहणीय तथ्य

निर्देशन चाहने वाले व्यक्ति को सर्वप्रथम यह पहचान करना आवश्यक है कि वह क्या है? इसके अतिरिक्त उसको इस रूप में निर्मित करने वाले परिवेश की खोज करना भी आवश्यक है क्योंकि जैसा भी वह है, उसको वैसा बनाने में उसके परिवेश का बहुत बड़ा हाथ रहता है। अतएव व्यक्ति के संबंध में उपयुक्त व्यक्ति' अध्ययन के अंतर्गत निम्नलिखित शीर्षकों के संबंध में आधारभूत सूचनाएँ एकत्र की जाती हैं :

1. भौतिक, सामाजिक-आर्थिक तथा सांस्कृतिक परिवेश
2. परिवार की वर्तमान स्थिति तथा उसका इतिहास
3. व्यक्ति का स्वयं का विकास तथा उसकी वर्तमान स्थिति

1. **भौतिक, सामाजिक-आर्थिक तथा सांस्कृतिक परिवेश**

    i) **भौतिक परिवेश :** भौतिक परिवेश के अंतर्गत व्यक्ति का वह पास-पड़ोस आता है जिसमें वह इस समय रह रहा है और जिसमें रहकर वह बड़ा हुआ है। वह क्षेत्र नगरीय या ग्रामीण, झोंपड़-पट्टी या सुंदर आवासीय परिसर हो सकता है। क्या उसका घर किसी विशाल इमारत में स्थित है जहाँ कम किराए पर बहुत से परिवारों के रहने योग्य आवास खंड हैं अथवा उसके परिवार का अपना स्वतंत्र आवास भवन है?

    ii) **सामाजिक-आर्थिक परिवेश :** जिस समाज में व्यक्ति विशेष का लालन-पालन हुआ है उसकी भौतिक सम्पन्नता के रूप में क्या स्थिति है? जिन लोगों के बीच में यह व्यक्ति विशेष रहता है, क्या वे कृषक समुदाय के हैं या व्यापारी अथवा व्यावसायिक श्रेणी के हैं? क्या वह समुदाय खेल परिसर की सुविधाओं तथा नवयुवकों की क्रियाओं के लिए अपेक्षित संसाधन जुटाने में सक्षम है।

    iii) **सांस्कृतिक परिवेश :** जिनके मध्य वह व्यक्ति विशेष रहता है उनके जीवन का ढंग क्या है? जीवन आदर्श तथा दृष्टिकोण क्या हैं? क्या वे सुशिक्षित तथा समृद्ध हैं?

2. **परिवार :** इसका इतिहास और इसकी वर्तमान हैसियत - परिवार के बारे में विभिन्न प्रकार की सूचनाएँ संकलित की जानी चाहिए जिससे व्यक्ति विशेष की संरचनात्मक विशेषताओं को समझा जा सकता है। यथा :

    परिवार के सदस्यों का स्वास्थ्य कैसा है? उनकी कद-काठी कैसी है? विशेष रूप से पिता-माता की, भाई-बहनों की। क्या ये लोग अधिकांशतः सुदृढ़-बलिष्ठ हैं या आलसी, मजबूत या कमजोर किस्म के हैं।

परिवार के सदस्यों की शैक्षिक और व्यावसायिक योग्यताओं की क्या स्थिति है? उनकी विशिष्ट योग्यताएँ या अयोग्यताएँ क्या-क्या हैं?

क्या परिवार में सद्भाव और समरसता है या वह खंडित परिवार है? यदि वह खण्डित परिवार है तो व्यक्ति विशेष सुरक्षा और उचित संरक्षण के अभाव से पीड़ित होगा। व्यक्ति विशेष के प्रति माता-पिता का दृष्टिकोण किस प्रकार का है - लाड़-प्यार भरा, उपेक्षित, प्रभुत्वपूर्ण या अड़ंगे लगाने वाला?

परिवार के सदस्यों का संवेगात्मक समायोजन किस प्रकार का है? क्या वे बदमिजाज हैं, प्रसन्नचित्त हैं, अव्यवस्थित चित्त हैं, आक्रामक हैं, दब्बू किस्म के हैं, आत्मकेंद्रित हैं अथवा मुक्त स्वभाव के हैं? क्या परिवार में सदा कोई झगड़ा-टंटा बना रहता है?

परिवार की सामाजिक स्थिति किस प्रकार की है? क्या यह नेतृत्व प्रदान करने वाला परिवार है? क्या यह उन्नति की ओर बढ़ रहा है? अथवा अवनति की ओर जा रहा है? क्या परिवार प्रसिद्ध है? अथवा उसके बारे में अन्य लोग बहुत कम जानते हैं? या कि वह उपेक्षित एकांगी परिवार है? क्या परिवार फिजूल खर्ची करने वाला है या मितव्ययी है? क्या यह बदनाम हो चुका है अथवा सर्वसम्मानित है?

3. **अध्ययन किए जाने वाले व्यक्ति विशेष का इतिहास :** इस व्यक्ति विशेष का भी अध्ययन इसी प्रकार से करना चाहिए। पारिवारिक इतिहास के अंतर्गत जिन शीर्ष बिंदुओं को सम्मिलित किया गया है, उन्हीं सारे बिंदुओं के आधार पर इस व्यक्ति विशेष के इतिहास का भी अध्ययन करना चाहिए।

   i) **व्यक्ति विशेष का शारीरिक स्वास्थ्य :** क्या उसकी शारीरिक वृद्धि सामान्य है? जो उसके कद, आयु, वजन, चाल-ढाल, बोलने के ढंग तथा यौवनारंभ के सभी लक्षणों के अनुसार है। क्या उसे कभी कोई रोग हुआ है, अथवा शारीरिक कमी है? जो सुनने तथा देखने के अनुसार है। क्या व्यक्ति विशेष देखने में चुस्त-दुरुस्त, उत्साह युक्त लगता है या मरियल सा लगता है? उसकी चिकित्सा जाँच हुई हो तो उसके से क्या निष्कर्ष निकले हैं।

   ii) **व्यक्ति विशेष की योग्यताएँ :** क्या व्यक्ति विशेष का बुद्धि-परीक्षण किया गया है? उसकी विषेष योग्यता क्या है? क्या उसका मानसिक विकास सामान्य रहा है अथवा उसके अंदर सामान्य से पूर्व ही कुछ विशेष योग्यताओं का विकास हो चुका है? क्या विद्यालय में उसने बहुत अच्छा कार्य किया है अथवा कमज़ोर रहा है?

   iii) **संवेगात्मक विकास :** क्या वह संवेगात्मक रूप से परिपक्व है? अथवा संवेगात्मक रूप से असंतुलित है? क्या वह बात-बात में तीव्र विरोध का प्रदर्शन करता है अथवा विद्वेष या प्रेम का? क्या वह दब्बू किस्म का है, अथवा उत्सुक, चिंतित, हतोत्साही अथवा पलायनवादी? क्या वह तुनक मिजाज है अथवा उस पर नियंत्रण करना मुश्किल हो जाता है? क्या वह अच्छे स्वभाव का है और अति विश्वास सम्पन्न है?

   iv) **सामाजिक विकास :** परिवार में उसकी स्थिति क्या है? क्या वह इकलौता बालक है? क्या उसके साथ विशेष पक्षपात किया जाता है? क्या वह सबसे बड़ा बालक है? अपनी कक्षा के साथियों से उसका व्यवहार कैसा है? क्या वह लज्जालु अथवा अल्पभाषी है? क्या वह नेता, अनुयायी या अलग-थलग रहने वाला व्यक्ति है? क्या वह दूसरों से मुठभेड़ करने में अपनी दृढ़ता या शक्ति दिखाकर उन्हें चोट पहुँचाता है? क्या वह इस प्रकार के तौर-तरीके दर्शाता है, जिन्हें उसके साथी नापसंद करते हैं? क्या उसका स्वभाव दूसरों से पंगा लेने का है?

   v) **आदर्श तथा मनोवृत्ति :** क्या वह व्यक्ति आदर्शों में विश्वास करने वाला है? क्या वह शिष्ट जनोचित रुचियों वाला है? क्या वह कभी बाल-अपराधी रहा है? क्या उसने कभी घर, विद्यालय तथा समाज में कोई परेशानी खड़ी की है?

ये कुछ ऐसी बातें हैं जिन्हें किसी छात्र विशेष के बारे में पहले जान लेनी चाहिए ताकि उसका सही निदान किया जा सके। व्यक्ति विशेष के बारे में इस प्रकार की संकलित जानकारियों के आधार पर ही निष्कर्ष निकालने चाहिए। परिवेश, परिवार तथा उस व्यक्ति के स्वयं के विकास के संबंध में प्राप्त सभी प्रकार की सूचनाओं के परिप्रेक्ष्य में ही सम्पूर्ण व्यक्ति का विवेचन किया जाता है। वह जो कुछ है, वैसा उसे किन परिस्थितियों ने बनाया - इसके कारणों का विवरण दिया जाता है। इन निष्कर्षों के आधार पर ही उचित कार्रवाई कार्यवाही करने की संस्तुति की जाती है।

जो भी संस्तुति की जाए वह व्यावहारिक हो तथा व्यक्ति की समस्या का हल खोजने में सहायक होनी चाहिए। जो भी सुझाव दिए जाएँ वे उस छात्र की आवश्यकताओं के अनुरूप होने चाहिए।

व्यक्ति अध्ययन में आने वाली कठिनाइयाँ : केस का अध्ययन करना इतना आसान काम नहीं है जितना, प्रायः समझा जाता है। यह बहुत जटिल तथा समय-साध्य कार्य है। यदि अध्ययनकर्त्ता कुशल व्यक्ति नहीं है तो अध्ययन व्यक्तिनिष्ठ हो सकता है। कक्षा के सभी बालकों का समग्र व्यक्तिवृत्त तैयार करना व्यावहारिक भी नहीं है। अध्ययन की दृष्टि से अध्यापक को चाहिए कि वह एक या दो छात्रों का अध्ययन करे। उपबोधक को अध्ययन करने के उद्देश्य से अधिक केसों के अध्ययन की आवश्यकता होगी। किंतु उसे अनजाने में होने वाली गलतियों से अपने को बचाकर रखना चाहिए। सावधानी बरती जाए कि :

1. केस अध्ययन सतही किस्म का नहीं होना चाहिए। अध्ययनार्थ गृहीत सभी समस्याओं की गहरी छानबीन की जाए।
2. माता-पिता से सम्पर्क अपेक्षित है। चिकित्सक की राय प्राप्त करनी चाहिए। छात्र विशेष के सम्पर्क में आने वाले सभी लोगों से संपर्क साधना चाहिए। अध्ययन एक पक्षीय न हो।
3. सभी संभव तथ्यों का विस्तार से संग्रह करना चाहिए। छोटा से छोटा तथ्य भी उपेक्षित न रहे।

बोध प्रश्न

टिप्पणी : क) अपने उत्तरों के लिए नीचे दिए गए स्थान का प्रयोग कीजिए।

ख) इस खंड के अंत में दिए गए उत्तरों से अपने उत्तर मिलाइए।

4. उन तीन मुख्य शीर्षकों/ उपशीर्षकों को सूचीबद्ध कीजिए, जिनके अंतर्गत आप केस अध्ययन प्रविधि के रूप में सूचनाओं का संकलन करेंगे।

....

....

....

....

....

5.4.8 संचयी वृत्त

विद्यार्थी के मूल्यांकन की दृष्टि से संगृहीत सूचनाओं का अभिलेख संचयी-वृत्त कहलाता है। समय-समय पर विभिन्न स्रोतों, प्रविधियों, परीक्षणों, साक्षात्कारों, प्रेक्षणों द्वारा या व्यक्ति अध्ययन तथा अन्य प्रकारों से छात्र के संबंध में जो सूचनाएँ संकलित की जाती हैं, उन्हें साररूप में संगृहीत कर संचयी वृत्त में समाहित कर लिया जाता है ताकि छात्र के बारे में किसी शैक्षिक या व्यावसायिक समस्या के उपस्थित होने पर उसके समाधानार्थ इसका उपयोग किया जा सके।

संचयी-वृत्त को इस प्रकार परिभाषित किया गया है : "संचयी-वृत्त अभिलेखन, संचयन तथा छात्रों के निर्देशन के लिए सूचनाओं का उपयोग करने की आवश्यक एक विधि है।" संचयी-वृत्त में निम्नलिखित बिंदुओं पर सूचनाएँ अंकित की जाती हैं :

1. **व्यक्तिगत**

   i) नाम

   ii) जन्मतिथि

   iii) जन्मस्थान तथा जन्म-प्रमाण पत्र

   iv) लिंग

   v) वर्ण

   vi) निवास स्थान का पता

2. **आवास**

   i) माता-पिता का नाम

   ii) माता-पिता का व्यवसाय

   iii) माता-पिता जीवित हैं या दिवंगत हो गए हैं?

   iv) आर्थिक स्थिति

   v) भाई-बहिनों की संख्या : ज्येष्ठ या कनिष्ठ

   vi) घर में बोली जाने वाली भाषा

3. **परीक्षण अंक**

   i) सामान्य बुद्धि

   ii) उपलब्धि

   iii) दूसरे परीक्षण अंक

   iv) व्यक्तित्व के गुण

4. **विद्यालय में उपस्थिति**

   i) वर्ष में उपस्थिति/ अनुपस्थिति के दिनों की संख्या

   ii) विद्यालय में उपस्थिति/ अनुपस्थिति की तारीखें

5. **स्वास्थ्य** : शारीरिक अपंगता का अभिलेख, टीकाकरण का अभिलेख, उन रोगों का अभिलेख जिनसे पीड़ित रहा था।

6. **विविध**

   i) व्यावसायिक योजना

   ii) पाठ्येतर क्रियाकलाप

   iii) अध्ययन के दौरान सेवा-कार्य

   iv) उपबोधक की टिप्पणी

यदि हम संचयी-वृत्त में अंकित घटकों का विश्लेषण करें तो हमें ज्ञात हो जाएगा कि इसमें उन्हीं बिंदुओं का अंकन किया जाता है जिनका कि व्यक्तिवृत्त अध्ययन के प्रसंग में उल्लेख हुआ है। संचयी-वृत्त वाली फाइल में अमानकीकृत विधियों, यथा : जाँच-सूची, प्रश्नावली, आत्मकथा आदि द्वारा संकलित सूचनाओं/ आंकड़ों को नहीं रखा जाता। ध्यान रहे कि सूचनाओं का अभिलेखन और संचयन उतना महत्वपूर्ण नहीं है जितना कि सूचनाओं का उपयोग वस्तुतः उनका वास्तविक उपयोग ही महत्वपूर्ण है।

संचयी-वृत्त की आवश्यकता और उसका महत्व

छात्र के बारे में निर्मित संचयी-वृत्त का महत्व अध्यापकों, परामर्शदाताओं और प्रशासकों के लिए है। इन लोगों को छात्र के बारे में महत्वपूर्ण सूचनाएँ इसी संचयी-वृत्त से प्राप्त होती हैं। निर्देशन सेवा में संचयी-वृत्त का महत्व निम्नलिखित है :

निर्देशन-सेवा में महत्व

1. निर्देशन सेवा के आधारभूत सिद्धांत और मान्यता के अनुसार वैयक्तिक भिन्नता निर्देशन का मूल आधार है। प्रत्येक व्यक्ति दूसरे व्यक्ति से किन्हीं मनोवैज्ञानिक विशेषताओं, गुणों या गुण समूहों में भिन्न होता है। उदाहरण के लिए, कोई भी दो व्यक्ति एक समान नहीं होते। जहाँ तक उनकी अभिरुचियों, अभिवृत्तियों तथा योग्यताओं का संबंध है, वे परस्पर भिन्न होते हैं। उनके संचयी वृत्तों से इस प्रकार की वैयक्तिक विभिन्नताओं का पता लगता है। इनसे यह भी पता लग जाता है कि व्यक्ति विशेष की क्या प्रकृति है और विकास के विविध सोपानों के दौरान उसे कितनी मात्रा में व्यावसायिक सहायता की आवश्यकता है।

2. संचयी वृत्त छात्र विशेष के शैक्षिक विकास का एक स्थायी इतिहास है। यह उसकी उपस्थिति/ अनुपस्थिति स्वास्थ्य, उपलब्धियों तथा विद्यालय के अन्य पक्षों से संबंधित सूचनाओं का संग्रह है। अतएव यह उस विद्यार्थी विशेष की भावी आवश्यकताओं का विश्लेषण करने में उपयोगी है ताकि आवश्यकताओं के आधार पर उसे शैक्षिक और व्यावसायिक निर्देशन दिया जा सके। उदाहरणार्थ, यदि यह छात्र के शारीरिक विकास की कमजोरी को इंगित करता है तो इसके आधार पर उन कमजोरियों को दूर करने के उपाय छात्र को सुझाए जा सकते हैं।

अध्यापन में इसका महत्व

1. छात्र विशेष का संचयी वृत्त अध्यापक को यह संकेत देता है कि छात्र की उपलब्धि उसकी मानसिक योग्यताओं के अनुपात में है या नहीं। यदि छात्र की उपलब्धि कम है तो उसका मार्गदर्शन करके उसे यह बताया जा सकता है कि अपनी कमियों को दूर करने के लिए उसे क्या नए कदम उठाने चाहिए।

2. विभिन्न छात्रों के संचयी वृत्तों की सहायता से अध्यापक छात्रों की शैक्षिक अभिवृत्तियों तथा मानसिक योग्यताओं के अनुसार उनका वर्गीकरण कर सकता है।

3. कक्षा के विभिन्न छात्रों के संचयी वृत्त छात्रों की आवश्यकताएँ समझने में नए अध्यापक की मदद करते हैं।

4. संचयी वृत्त छात्र की व्यवहार-संबंधी या शिक्षा-संबंधी समस्याओं का विश्लेषण करने के लिए निदानात्मक उपकरण का काम करते हैं। उदाहरण के लिए यदि कोई विद्यार्थी कक्षा में पिछड़ा हुआ है तो उसके पिछड़ेपन को दूर करने के लिए कौन से कदम उठाने चाहिए?

5. संचयी वृत्त ऐसे छात्रों का पता लगाने में सहायक है जिन पर व्यक्तिगत रूप से ध्यान देने की आवश्यकता है।

6. छात्र के बारे में रिपोर्ट लिखने में अध्यापक को संचयी वृत्त से सहायता मिलती है। यही नहीं, छात्र को वस्तुनिष्ठ चरित्र प्रमाण-पत्र देने में भी इससे प्रधानाचार्य को मदद मिलती है।

7. छात्रों के संचयी वृत्तों के आधार पर अध्यापकगण समस्या प्रधान बालकों और विशेष सहायता की आवश्यकता रखने वाले बालकों की पहचान कर सकते हैं। तदनुसार वे अपने अध्यापन-कार्य को समायोजित कर सकते हैं।

8. व्यक्ति अध्ययन तैयार करने की दृष्टि से संचयी वृत्त अध्यापकों के लिए बहुत उपयोगी सिद्व होते हैं, क्योंकि दोनों की संकलित सामग्री में कई समानताएँ पाई जाती हैं।

प्रशासकों के लिए महत्वपूर्ण

बाल-अपराध-न्यायालयों तथा परिवीक्षा अधिकारियों को किसी छात्र विशेष के बाल-अपराधी व्यवहार को समझने में संचयी वृत्त से पर्याप्त सूचना मिल जाती है।

अध्यापक-उपबोधकों के लिए छात्रों के संचयी वृत्तों की उपयोगिता ठीक उसी प्रकार से है जिस प्रकार से एक अच्छा चिकित्सक रोगी का इलाज शुरू करने से उसका पूरा पिछला विवरण पूछ कर लिख लेता है। इस संचयी वृत्त से उसे रोगी की पिछली बीमारियों और उनके ठीक होने न होने के बारे में पूरी जानकारी मिल जाती है और इन्हीं सारी बातों को ध्यान में रखते हुए वह रोगी की वर्तमान बीमारी का निदान कर उसकी चिकित्सा शुरू सकता है। ठीक यही तरीका छात्र के बारे में अध्यापक-उपबोधक अपनाता है। छात्र के संचयी वृत्त को देखकर उसे पता चल जाता है कि छात्र किन बातों में ठीक है और किन बातों में कमजोर और यह भी कि वर्तमान कमियों को दूर करने के लिए उसे क्या सलाह दी जानी है। मनुष्य आखिर मनुष्य ही है। वह अपनी योग्यता के शिखर पर सदा आरूढ़ नहीं रहता। छात्र का अतीत यदि कमजोरियों से भरा हो तो वह उसके अध्यापक के लिए एक चुनौती होनी चाहिए और तब छात्र को समुचित दिशा में सफलता प्राप्त कराने के लिए अध्यापक को उसकी सहायता करनी चाहिए।

अच्छे संचयी वृत्त की निम्नलिखित विशेषताएँ होती हैं :

1. जो भी सूचनाएँ संकलित की जाएँ वे अपने-आप में परिपूर्ण, व्यापक और उपयुक्त हों, जिससे ठोस निष्कर्ष निकाले जा सकें। प्रगति-विवरण की तुलना में संचयी वृत्त को अधिक व्यापक होना चाहिए। चूँकि यह अभिलेख विद्यार्थी की शैक्षिक अभिवृद्धि का स्थायी इतिहास होता है, इसलिए इसमें वे सभी सार्थक सूचनाएँ होनी चाहिए जिनकी अध्यापक या निर्देशक को आवश्यकता होती है। उदाहरण के लिए, इसमें व्यावसायिक योजनाओं का संकेत मिलना चाहिए। व्यावसायिक रुचियों तथा छात्र की व्यावसायिक पसंद तथा व्यावसायिक निर्देशन के लिए वांछित छात्र की न्यूनताओं और गुणों का इसमें संकेत होना चाहिए।

2. इसमें जो भी सूचना अंकित की जाए वे सत्य वैध हो। जो सूचना दूसरों द्वारा प्राप्त होगी, उसकी वैधता तथा विश्वसनीयता सीमित हो सकती है। संचयी वृत्त का एक व्यापक और आदर्श प्रारूप तैयार करने से पहले यह निश्चय कर लेना चाहिए कि इसमें किन-किन बिंदुओं के समावेश की आवश्यकता है। उदाहरणार्थ, यदि कोई हाई स्कूल स्तर का छात्र किसी नौकरी के लिए मार्गदर्शन चाहता है तो उसके लिए कौन-कौन सी बातों की जानकारी अपेक्षित होगी - इसका उल्लेख इसमें होना चाहिए। मापन के अन्य उपकरणों की भांति संचयी वृत्त तभी वैध हो सकता है, जब यह उसी बात का मापन करे जिसका यह मापन करना चाहता है।

3. सूचना तभी विश्वसनीय होगी जब वे कई अध्यापकों द्वारा प्राप्त की गई हों और फिर उन्हें एक स्थान पर एकत्रित कर दिया गया हो। संचयी वृत्त की विश्वसनीयता इस बात पर निर्भर है कि छात्र की अभिवृद्धि के विभिन्न पक्षों पर आधारित सूचनाएँ एकत्र करने और उनका संयोजन करने में कितनी सावधानी बरती गई है। इस प्रकार की जो भी सूचनाएँ संकलित की जाएँ, वे छात्र से व्यक्तिगत सम्पर्क के परिणामस्वरूप उपलब्ध की गई होनी चाहिए। वे साथ हीं, केवल एक अध्यापक के सम्पर्क के द्वारा ही प्राप्त होने से प्रामाणिक नहीं होगी अपितु छात्र के सम्पर्क में आने वाले एकाधिक अध्यापकों द्वारा संकलित की गई हों। जो सूचना अन्य माध्यम से प्राप्त हो, उसकी पहले सम्पुष्टि कर लेनी चाहिए।

4. संचयी-वृत्त का समय-समय पर पुनर्मूल्यांकन करते रहना चाहिए।

5. संचयी वृत्त वस्तुनिष्ठ होना चाहिए तथा व्यक्तिगत राय या पूर्वाग्रहों से मुक्त होना चाहिए। यदि, सूचनाओं के संकलन में पक्षपात या अपनी पसंद - नापसंद का समावेश होगा तो वह अभिलेख विश्वसनीय नहीं होगा।

6. यह उपयोग में आने योग्य होना चाहिए। यह तभी उपयोगी हो सकता है जब यह या तो कार्ड के रूप में हो या फिर फोल्डर के रूप में। फोल्डर वाले संचयी वृत्तों का आजकल अधिक प्रचलन है, क्योंकि इसमें छात्र से संबंधित बहुविध सामग्री सन्निविष्ट की जा सकती है।

बोध प्रश्न

टिप्पणी : क) अपने उत्तरों के लिए नीचे दिए गए स्थान का प्रयोग कीजिए।

ख) इस खंड के अंत में दिए गए उत्तरों से अपने उत्तर मिलाइए।

5. अध्यापन में संचयी वृत्त के महत्व का संक्षिप्त में प्रतिपादन कीजिए।

....

....

....

....

....

5.4.9 साक्षात्कार

साक्षात्कार एक उद्देश्यपूर्ण संवाद है। विंघम और मूर के अनुसार यह एक गंभीर संवाद है जो साक्षात्कारजन्य संतोष की अपेक्षा एक निश्चित उद्देश्य की ओर उन्मुख होता है। साक्षात्कार आयोजित करने के उद्देश्य - परिचयात्मक, तथ्याश्रित, मूल्यांकनपरक, ज्ञानवर्धक तथा चिकित्सकीय प्रकृति वाली सूचनाएँ एकत्र करना। इसकी दूसरी विशेषता है - साक्षात्कारकर्त्ता तथा जिससे साक्षात्कार दाता के मध्य परस्पर संबंध स्थापित होना है। इस अवसर का उपयोग साक्षातकर्ता से मित्रवत् अनौपचारिक बातचीत के लिए किया जाना चाहिए। उसे आत्मविश्वासपूर्ण मुक्त तथा वातावरण में बातचीत करने की अनुमति दी जानी चाहिए।

विभिन्न प्रकार के साक्षात्कार

जिन-जिन उद्देश्यों को ध्यान में रखकर साक्षात्कार किया जाता है उनके अनुसार ही साक्षात्कार भिन्न-भिन्न प्रकार के होते हैं। यदि किसी पद के लिए किसी प्रत्याशी का चयन करना है तो यह नियोजन या रोज़गार संबंधी साक्षात्कार होगा। यदि साक्षात्कार का उद्देश्य तथ्य संग्रह या उनकी संपुष्टि करना है तो इसे तथ्यान्वेषी साक्षात्कार कहा जाएगा। इस प्रकार साक्षात्कारों का वर्गीकरण उनके उद्देश्यानुसार होता है। दूसरे प्रकार के विभाजन का आधार साक्षात्कार करने वाले और साक्षात्कार देने वाले व्यक्तियों के मध्य संबंधों के स्वरूप के आधार पर ही साक्षात्कारों को वर्गीकृत किया जा सकता है। यदि साक्षात्कार में उपबोधक की मुख्य भूमिका है तो इसे उपबोधक केंद्रित साक्षात्कार कहा जाएगा। यदि यह उपबोधक-प्रार्थी को प्रमुखता देता है तो इसे उपबोधन-प्रार्थी केंद्रित साक्षात्कार कहा जाता है। कभी-कभी साक्षात्कार करने के तरीके से भी साक्षात्कार के प्रकार का निर्धारण होता है।

साक्षात्कार के प्रमुख प्रकार निम्नलिखित हैं :

1. **स्थानन/ रोज़गार साक्षात्कार** : इस प्रकार के साक्षात्कार का उद्देश्य पद के लिए प्रत्याशी की पात्रता का आकलन करना है। इसमें साक्षात्कारकर्त्ता अधिक बोलता है यानी प्रश्न पूछता जाता है और उसकी तुलना में साक्षात्कार देने वाला कम बोलता है यानी वह केवल पूछे गए प्रश्नों के उत्तर ही देता है।

2. **तथ्यान्वेषी साक्षात्कार** : अन्य स्रोतों से संकलित आंकड़ों/ सूचनाओं तथा तथ्यों की संपुष्टि करना तथ्यान्वेषण साक्षात्कार का उद्देश्य होता है।

3. **निदानात्मक साक्षात्कार** : इस प्रकार के साक्षात्कार का उददेश्य समस्या के निदान खोजकर उसका उपचार करना है। इसमें साक्षात्कारकर्त्ता द्वारा साक्षात्कार देने वाले व्यक्ति की समस्या का निदान करके उसके लक्षणों को ज्ञात करने का प्रयत्न किया जाता है। यानी साक्षात्कार देने वाले व्यक्ति की समस्या का हल करने के लिए आवश्यक सूचनाओं का संकलन किया जाता है।

4. **उपबोधन प्रधान साक्षात्कार** : उपबोधन प्रधान साक्षात्कार का उद्देश्य साक्षात्कार देने वाले व्यक्ति की अंतर्दृष्टि का विकास करना होता है। इस प्रकार के साक्षात्कार प्रारंभ सूचना के संकलन कार्य से होता है। फिर निर्देशन प्रक्रिया के साथ-साथ अग्रसर होता हुआ वह समस्या के मनोवैज्ञानिक उपचार के रूप में समाप्त हो जाता है।

5. **व्यक्तिगत तथा सामूहिक साक्षात्कार** : जब एक समूह में बहुत से लोगों का साक्षात्कार लिया जाए, तो इसे सामूहिक साक्षात्कार कहते हैं। किंतु मूलरूप में सभी प्रकार के सामूहिक साक्षात्कार व्यक्तिगत साक्षात्कार ही हुआ करते हैं, क्योंकि सामूहिक साक्षात्कार भी तो व्यक्ति के रूप में साक्षात्कार देने वाले व्यक्तियों का ही साक्षात्कार है। सामूहिक साक्षात्कार का उद्देश्य समूह की सामान्य समस्याओं का संकलन करना और उनकी जानकारी प्राप्त करना है। व्यक्तिनिष्ठ साक्षात्कार में व्यक्ति विशेष से संबंधित समस्याओं की ओर ही विशेष झुकाव रहता है।

   कार्ल रोज़र्स का व्यक्तिनिष्ठ साक्षात्कार के विषय में भिन्न मत हैं। उनका मत है कि व्यक्तिनिष्ठ साक्षात्कार का केंद्र बिंदु व्यक्ति को प्रभावित करने वाली समस्या नहीं है बल्कि उसका केंद्र बिंदु तो स्वयं व्यक्ति ही है। व्यक्तिनिष्ठ साक्षात्कार का उद्देश्य व्यक्ति विशेष की किसी एक समस्या का निराकरण करना नहीं होता अपितु साक्षात्कार देने वाले को इस प्रकार सहायता प्रदान करना है कि वह खुद ही इतना सक्षम हो जाए कि वह वर्तमान की और भविष्य में आने वाली सभी समस्याओं का कुशलतापूर्वक और समायोजित ढंग से सामना कर सके।

6. **सत्तावादी तथा गैर-सत्तावादी साक्षात्कार** (Authoritarian v/s Non authoritarian) : सत्तावादी साक्षात्कार में सेवार्थी तथा उसकी समस्याएँ पीछे छूट जाती हैं और साक्षात्कारकर्त्ता अपनी उन्नत स्थिति का लाभ उठाकर साक्षात्कार प्रक्रिया में हावी हो जाता है। गैर-सत्तावादी साक्षात्कार में साक्षात्कारकर्त्ता की अधिनायक जैसी भूमिका का वर्जन होता है। भले ही साक्षात्कार देने वाला व्यक्ति साक्षात्कारकर्त्ता को सत्ता संपन्न समझे फिर भी इस प्रकार के साक्षात्कार में साक्षात्कारकर्त्ता एक अधिनायक की भाँति व्यवहार नहीं करता। वह सेवार्थी की भावनाओं का आदर करता है, उनकी वर्जना नहीं करता। वह साक्षात्कार लेते समय कई प्रकार की तकनीकों का उपयोग करता है, जैसे प्रत्याशा/ उम्मीदवार को सुझाव देना, उत्साहित करना, उपबोधन देना, आश्वासन प्रदान करना, व्याख्या करना तथा सूचना प्रदान करना।

7. **निदेशित व अनिदेशित साक्षात्कार** : निदेशित साक्षात्कार के अंतर्गत साक्षात्कारकर्त्ता सेवार्थी को निर्देशन देता है। कभी वह सुझाव देकर, प्रोत्साहित कर अथवा डरा-धमकाकर अपने उपबोधन से मार्ग प्रशस्त करता है। किंतु अनिदेशित, साक्षात्कार में यह मान लिया जाता है कि साक्षात्कार देने वाले व्यक्ति में स्वयं विकास और अभिवृद्धि करने की क्षमता विद्यमान है। अनिदेशित साक्षात्कारों में सेवार्थी को अपनी भावनाओं और संवेगों को प्रकट

करने की पूर्ण स्वतंत्रता रहती है। साक्षात्कार लेने वाला सेवार्थी के भूतकाल में न तो झाँककर देखने का प्रयत्न करता है और न ही उसे कोई सुझाव देता है। वह प्रार्थी को पुनर्शिक्षित करने या परिवर्तित करने का प्रयत्न भी नहीं करता।

8. **संरचित व असंरचित साक्षात्कार** : संरचित साक्षात्कार में निश्चयात्मक प्रश्नों की एक श्रृंखला पूर्वनिश्चित होती है। साक्षात्कारकर्त्ता प्रश्न करते समय स्वयं को केवल उन्हीं बिंदुओं तक सीमित रखता है जिनकी वह साक्षात्कार के समय चर्चा करना चाहता है। संरचित साक्षात्कार में निश्चित प्रश्न ही पूछे जाते हैं जबकि असंरचित साक्षात्कार में ऐसा कोई प्रतिबंध नहीं होता। उसमें साक्षात्कार लेने वाला अपने विचार व्यक्त करने में पूर्ण स्वतंत्र होता है। चर्चा का विषय पूर्व निर्धारित नहीं होता। असरंचित साक्षात्कार में कभी-कभी ऐसी सूचनाएँ भी प्राप्त होती हैं जो देखने में महत्वहीन या तुच्छ लगें किंतु जब उनकी व्याख्या की जाती है तो वे अत्यधिक उपयोगी सिद्ध होती हैं।

साक्षात्कार के माध्यम से किए जान वाले उपबोधन के सामान्य नियम

किसी भी साक्षात्कार की सफलता में निम्नलिखित बातों पर विशेष ध्यान दिया जाए :

1. साक्षात्कार की परिस्थिति ऐसी हो जहाँ अधिक अनुभवी और प्रशिक्षित व्यक्ति दूसरे की बात भली प्रकार सुनने को तत्पर रहे।

2. उपबोध्य को साक्षात्कार और उपबोधन की आवश्यकता महसूस होनी चाहिए।

3. उपबोधन प्रारंभ करने के पूर्व सेवार्थी के संबंध में अपेक्षित सभी तथ्यों की पूरी जानकारी उपबोधक के सामने रहे।

4. उपबोधक और उपबोध्य में सौहार्द पूर्ण संबंध स्थापित हो जाना चाहिए। यह एक प्रकार से उपबोधक विश्वास तथा समादरपूर्ण संबंध है जो कि विश्वास और सुरक्षा की भावना पर आधारित है।

5. साक्षात्कार का प्रारंभ पारस्परिक मधुर और स्नेहपूर्ण अभिवादनों से होना चाहिए। इसमें ऐसी प्रतीति नहीं होनी चाहिए कि सेवार्थी उपबोधक के अधीन है या कि एक व्यक्ति दूसरे पर हावी है।

6. चर्चा को मूल मुद्दे तक ही सीमित रखना चाहिए।

7. जब उपबोध्य अपनी बात कहना चाहे तो उसे अपनी बात कहने की अनुमति मिलनी चाहिए। उपबोध्य का विरोध करके अथवा उसको नीचा दिखाने से उपबोधक को कुछ भी हाथ लगने वाला नहीं है।

8. साक्षात्कार का लक्ष्य उपबोध्य में समस्या को समझने की अंतर्दृष्टि पैदा करना तथा उससे संबंधित परिणामों तका पहुँचना होना चाहिए।

9. निर्णय लेने में उपबोध्य को अग्रिम भूमिका निभाने का अवसर देना चाहिए।

10. साक्षात्कार की समाप्ति रचनात्मक सुझावों से होनी चाहिए।

साक्षात्कार के लाभ

साक्षात्कार व्यक्ति के अध्ययन हेतु काम आने वाली एक अमानकीकृत तकनीक है। छात्रों को उपबोधन प्रदान करने में साक्षात्कार का प्रायः उपयोग होता है। यह वह तकनीक है जिसके अभाव में उपबोधन का कार्य संभव नहीं है। यह एक मूल्यवान तकनीक है जिससे सूचनाओं की प्राप्ति, समूह को सूचनाएँ प्रदान करना तथा नए कर्मचारी का चयन करना संभव होता है एवं व्यक्ति को समायोजन करने तथा समस्या के समाधान में सहायता प्रदान की जाती है।

निर्देशन और उपबोधन की तकनीक के रूप में साक्षात्कार के निम्नलिखित लाभ हैं :

1. निर्देशन की अन्य तकनीकों से जो कार्य संभव नहीं है उन्हें सम्पन्न करने हेतु निर्देशन-कार्य में व्यापक रूप से प्रयुक्त होने वाली यह उत्तम तकनीक है। उदाहरणार्थ, व्यक्ति के निजी जीवन से संबंधित अधिकतर आँकड़ों/ सूचनाओं का अपेक्षाकृत अल्प समय और कम श्रम से संकलन करने में यह प्रविधि कारगर सिद्ध होती है।

2. यह बहुत लचीली तकनीक है। विभिन्न पृष्ठभूमि के सभी प्रकार के व्यक्तियों की सभी परिस्थितियों में यह तकनीक बहुत उपयोगी है।

3. यह बहुतेरे उद्देश्यों की पूरक है। आप अपना उद्देश्य निर्धारित कर तदनुसार साक्षात्कार कर सकते हैं। तथ्यान्वेषी साक्षात्कार का आयोजन करना चाहें तो आप छात्र के माता-पिता, मित्र, संबंधी, अध्यापक अथवा जो भी व्यक्ति उसके अधिक सम्पर्क में आया हो, उससे साक्षात्कार करें।

4. इसका बहुत अधिक उपचारात्मक मूल्य भी है। साक्षात्कारकर्त्ता और साक्षात्कार देने वाले व्यक्ति के मध्य में साक्षात्कार आमने-सामने का संबंध स्थापित करता है। प्रत्यक्ष संबंध स्थापित होने से सेवार्थी की समस्या के प्रति अंतर्दृष्टि का विकास होता है। साक्षात्कारकर्त्ता को सेवार्थी के संबंध में जो जानकारी प्राप्त होती है उसका बहुत उपचारात्मक महत्व है।

5. समस्या के निदान में साक्षात्कार सहायक है। प्रार्थी द्वारा अनुभूत समस्या के कारणों का उद्घाटन करने में यह बहुत सहायक है। इसीलिए कुछ मनोवैज्ञानिक साक्षात्कार को निदान और उपचार के लिए बहुत उपयोगी तकनीक मानते हैं।

6. आमने-सामने के सम्पर्क से सेवार्थी के व्यक्तित्व के संबंध में बहुत से महत्वपूर्ण सूत्र हाथ लग जाते हैं। मुख-मुद्रा, भावभंगिमा तथा बैठने का ढंग आदि मनोभावों की प्रतीति कराने में सहायक हैं तथा भावना और अभिवृत्ति को अप्रत्यक्ष रूप से उद्घाटित कर देते हैं।

7. साक्षात्कार सेवार्थी के लिए भी उपादेय है। इससे उसे अपनी समस्या तथा स्वयं के बारे में विचार करने में सहायता मिलती है। साक्षात्कार ही वह सर्वाधिक उपयोगी परिस्थिति होती है, जब सेवार्थी अपने बारे में, अपनी योग्यताओं, कौशलों, अभिरुचियों तथा अपने कार्य-जगत के बारे में समुचित समझ प्राप्त करता है।

8. साक्षात्कार के माध्यम से उपबोधक तथा सेवार्थी दोनों में ही अपने-अपने विचार तथा अभिवृत्तियों को पारस्परिक संवाद द्वारा प्रकट करने की इच्छा जाग्रत होती है।

एक तकनीक के रूप में साक्षात्कार की सीमाएँ

1. साक्षात्कार एक व्यक्तिनिष्ठ तकनीक है। सेवार्थी के बारे में सूचनाओं का संकलन करने में इसके अंदर वस्तुनिष्ठता की कमी है। साक्षात्कार के माध्यम से संकलित सूचनाओं की व्याख्या में साक्षात्कारकर्त्ता का व्यवहार पक्षपातपूर्ण और पूर्वाग्रहों से ग्रस्त हो सकता है।

2. व्यक्तिगत पक्षपात हो तो साक्षात्कार कम विश्वसनीय और अवैध होगा।

3. साक्षात्कार के परिणामों की व्याख्या करना बहुत कठिन है।

4. साक्षात्कार की उपयोगिता सीमित है। साक्षात्कार की सफलता साक्षात्कारकर्त्ता के व्यक्तित्व के गुणों पर निर्भर करती है। वह इस पर भी निर्भर करती है कि साक्षात्कार लेने हेतु उसने कितनी तैयारी की है तथा वह किस प्रकार से साक्षात्कार ले रहा है। यदि साक्षात्कारकर्त्ता एकपक्षीय बातचीत के द्वारा एकाधिकार बनाए हुए है और सेवार्थी जो कुछ कह रहा है, उसे सुना-अनुसुना कर रहा है तो ऐसी स्थिति में साक्षात्कार का मूल्य समाप्त हो जाता है।

बोध प्रश्न

टिप्पणी : क) अपने उत्तरों के लिए नीचे दिए गए स्थान का प्रयोग कीजिए।

ख) इस खंड के अंत में दिए गए उत्तरों से अपने उत्तर मिलाइए।

6. ऐसी किन्हीं पाँच अमानकीकृत तकनीकों की सूची बनाइए जिनका उपयोग आप अपने विद्यालय में करना चाहेंगे।

....

....

....

....

....

5.5 मानकीकृत तकनीकें

मानकीकृत परीक्षण चार प्रकार के होते हैं। ये हैं : उपलब्धि परीक्षण, अभिरुचि परीक्षण, अभिवृत्ति परीक्षण तथा व्यक्तित्व परीक्षण। इन प्रकारों में कुछ-कुछ तत्व एक दूसरे में परस्पर समाहित हैं। विशेष रूप से अभिरुचि परीक्षण और व्यक्तित्व परीक्षण में। आइए, एक-एक करके हम इनकी जानकारी प्राप्त करें।

5.5.1 अभिक्षमता परीक्षण

अभिक्षमता एक ऐसा विशेषक है जिससे किसी व्यक्ति विशेष की किसी निर्धारित क्षेत्र में कार्य संपादित करने की योग्यता प्रकट होती है या किसी निर्धारित क्षेत्र में कार्य निष्पादन को लिए वांछित अधिगम प्राप्त किया जाता है। इसके अंतर्गत उस जन्मजात आंतरिक या स्वाभाविक योग्यता का अनुमान लगाया जाता है जिसका अधिकतम विकास अधिगम अथवा दूसरे अनुभवों द्वारा संभव है। इसका विकास तो संभव है किंतु एक-निश्चित बिंदु से आगे अधिगम से भी विकास संभव नहीं है। यद्यपि यह एक विवादास्पद अवधारणा हो सकती है किंतु यहाँ इसका उल्लेख इसलिए किया गया है कि इसके आधार पर ही अभिक्षमता परीक्षणों का विकास किया जाता है। सिद्धांत रूप से अभिक्षमता परीक्षण द्वारा व्यक्ति की उस शक्ति का मापन किया जाता है जिससे निर्धारित क्रियाकलापों में सफलता उपलब्ध की जाती है अथवा उन क्रियाकलापों में निपुणता प्राप्त करना सीखा जाता है।

अभिक्षमता परीक्षणों का उपयोग उपबोधक और अन्य व्यक्ति इसलिए कर सकते हैं क्योंकि : (1) इनके द्वारा उन संभावित योग्यताओं का पता लग सकता है, जिनके बारे में परीक्षावाधीन व्यक्ति स्वयं भी अनभिज्ञ हो; (2) ये परीक्षण उस व्यक्ति विशेष की विशिष्ट या संभावित योग्यताओं के

विकास को प्रोत्साहित कर सकें; (3) इन परीक्षणों द्वारा उस व्यक्ति को ऐसी सूचनाएँ प्रदान की जा सकती हैं, जिनसे उस व्यक्ति को शैक्षिक तथा व्यवसाय संबंधी निर्णय लेने में अथवा अन्य प्रकार के प्रतियोगी विकल्पों के संबंध में निर्णय लेने में सहायता मिल सके; (4) इनके द्वारा व्यक्ति को अपनी शैक्षिक और व्यावसायिक सफलता के उस स्तर की भविष्यवाणी करने में सहायता प्राप्त हो सके जिसका वह व्यक्ति पूर्वानुमान लगा रहा हो; तथा (5) इनका उपयोग विकासात्मक और शैक्षिक कार्यों को लिए समान अभिक्षमता युक्त व्यक्तियों के समूह बनाने में हो सके।

विशिष्ट अभिक्षमता परीक्षण

आपने लिपिक अभिक्षमता परीक्षण तथा संख्यात्मक योग्यता परीक्षण आदि के विषय में देखा या सुना होगा। विशिष्ट अभिक्षमता परीक्षण का प्रयोग उस समय किया जाता है जब किसी विशेष व्यवसाय अथवा किसी प्रकार के अन्य कार्य में व्यक्ति की कार्य करने अथवा दक्षता प्राप्त करने की जन्मजात योग्यता का मापन करना हमारा उद्देश्य हो। जिन परीक्षणों से विशिष्ट अभिक्षमताओं का मापन किया जाता है उन्हें एकल अभिक्षमता परीक्षण कहा जाता है क्योंकि उनके द्वारा किसी एक विशिष्ट प्रकार की अभिक्षमता का मापन होता है; बहुधा उपबोधक अभियांत्रिकीय, लिपिकीय अथवा कलात्मक योग्यताओं में से किसी एक क्षेत्र की अभिक्षमताओं के मापन के लिए मानकीकृत परीक्षणों का उपयोग किया करते हैं। विभिन्न स्नातक तथा व्यावसायिक विद्यालयों में उपयोग करने के लिए एकल अभिक्षमता परीक्षणों का भी विकास किया गया है। कुछ विशेष विद्यालयीन विषयों के लिए भी अभिक्षमता परीक्षण उपलब्ध हैं।

व्यावसायिक अभिक्षमता परीक्षण मालाएँ/ समूह

कई प्रकार के व्यवसायों में या उनसे संबंधित अन्य क्रियाकलापों में बहुविध अभिक्षमता परीक्षण आयोजित किए जाते हैं जिनमें परीक्षणों-उप-परीक्षणों की एक लंबी श्रृंखला होती है। बहुविध अभिक्षमता परीक्षण समूह में सामान्यतः निम्नलिखित परीक्षण सम्मिलित हैं : सामान्य अभिक्षमता परीक्षण समूह (GATB); विभेदक अभिक्षमता परीक्षण समूह (DAT); फ्लेनेगन अभिक्षमता वर्गीकरण परीक्षण (FACT); तथा अकादमिक आश्वासन परीक्षण (APT) ।

शैक्षिक अभिक्षमता परीक्षण

शैक्षिक अथवा अकादमिक अभिक्षमता परीक्षणों का उपयोग शैक्षिक परिस्थितियों में व्यक्ति की निष्पादन क्षमता की संभाविता का मापन करने के लिए किया जाता है। इस प्रकार के परीक्षणों में SAT तथा PSAT परीक्षण मालाएँ सम्मिलित हैं। उच्च शैक्षिक स्तरों पर छात्र की निष्पादन क्षमता कैसी होती है इसकी भविष्यवाणी करने के लिए इस प्रकार की परीक्षण मालाएँ अधिक उपयुक्त हैं। इसे यदि आप 'शैक्षिक उपलब्धि परीक्षण' नाम दें तो 'शैक्षिक उपलब्धि परीक्षण' अपेक्षाकृत अधिक नाम दें तो उपयुक्त होगा; क्योंकि इसके द्वारा प्रकृति प्रदत्त योग्यता के आधार पर तो नहीं किंतु भूतकालीन अधिगम के आधार पर भावी शैक्षिक उपलब्धि/ सम्प्राप्ति की भविष्यवाणी करने में अधिक सहायता मिलती है।

बोध प्रश्न

टिप्पणी : क) अपने उत्तरों के लिए नीचे दिए गए स्थान का प्रयोग कीजिए।

ख) इस खंड के अंत में दिए गए उत्तरों से अपने उत्तर मिलाइए।

7. तीन प्रकार के अभिक्षमता परीक्षणों के नाम लिखिए?

....

....

....

5.5.2 उपलब्धि परीक्षण

विद्यालय के विभिन्न विषयों में छात्रों की निष्पादन क्षमता की जाँच के लिए आप उपलब्धि परीक्षणों के प्रयोग करते आए हैं। सभी प्रकार की परीक्षाएँ - चाहे वे इकाई परीक्षा, सत्रीय परीक्षा अथवा वार्षिक परीक्षा हो, उपलब्धि परीक्षण से भिन्न कुछ और नहीं है। ये परीक्षण उन कौशलों या अभियोग्यताओं पर केंद्रित होते हैं जो विद्यालयों में परम्परागत रूप से अध्ययन द्वारा उपार्जित की जाती हैं। अतः उपलब्धि परीक्षणों को इस प्रकार परिभाषित किया जा सकता है कि ये ऐसे उपकरण हैं जिनका निर्माण छात्रों की उस अधिगम की मात्रा को मापने के लिए किया गया है जो सभी विद्यालयों में विशिष्ट पाठ्यचर्या क्षेत्रों में समान रूप से उपार्जित की जाती है, यथा - गणित तथा अंग्रेज़ी के प्रयोग आदि में।

उपलब्धि परीक्षणों का उपयोग अधिगम-मापन के संबंध म किया जाता है। अधिगम से संबंधित स्थितियाँ हैं : (1) अधिगम की मात्रा, (2) अधिगम की गति, (3) दूसरों के साथ तुलना अथवा विभिन्न क्षेत्रों में स्वयं की उपलब्धि से तुलना, (4) उपक्षेत्रों में अधिगम का स्तर तथा (5) विषयवस्तु के क्षेत्र में गुणवत्ता या न्यूनता जो कि उनके व्यापक उपयोग के फलस्वरूप होती है तथा उपयुक्त संदर्भ सामग्री के आसानी से उपलब्ध होने पर आती है।

बोध प्रश्न

टिप्पणी : क) अपने उत्तरों के लिए नीचे दिए गए स्थान का प्रयोग कीजिए।

ख) इस खंड के अंत में दिए गए उत्तरों से अपने उत्तर मिलाइए।

8. उपलब्धि परीक्षणों की विद्यालय में आवश्यकता तथा उनके महत्व पर संक्षेप में उत्तर दीजिए :

....

....

....

....

....

....

5.5.3 अभिरुचि तालिका

आपने अपनी कक्षा में देखा होगा कि कुछ छात्र गणित की ओर अपना झुकाव अधिक दिखाते हैं, जबकि कुछ संगणक की ओर, कुछ साहित्यिक गतिविधियों की ओर, तो कुछ चित्रकारी आदि की ओर। किन्हीं वस्तुओं, क्रियाओं या अनुभवों की ओर व्यवहार का अभिमुखीकरण से अभिरुचि कहलाता है। यह हमारी पसंद और नापसंद, अथवा हमारे आकर्षणों और अपकर्षणों की अभिव्यक्ति है। मानव का स्वभाव है कि वह उसी वस्तु का चयन करता है जिसे वह सर्वाधिक स्वीकार करता है तथा अनेकों में से उपयुक्त विकल्पों का चयन करता है। वह अपनी पसंद की वस्तुओं या क्रियाओं आदि के पीछे चल पड़ता है। इसी प्रवृत्ति के फलस्वरूप अपनी पसंद की क्रियाओं से उसे संतोष, सफलता और प्रसन्नता प्राप्त होती है।

अभिरुचियों का संबंध सामान्य योग्यता, विशिष्ट अभिक्षमताओं तथा अनेक प्रकार के मूल्यों से होता है। भाषिक और वैज्ञानिक अभिरुचियाँ प्रत्यक्षतः बुद्धि से सह संबंधित हैं, तकनीकी अभिरुचियाँ यांत्रिकी अभिक्षमता से तथा व्यापारिक अभिरुचियाँ सैद्धांतिक, सामाजिक या सौंदर्यात्मक मूल्यों के बजाय भौतिक मूल्यों से संबंधित होती हैं।

अभिरुचियों का परीक्षण कुछ उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए किया जाता है। यथा :

1. अध्यापकों और उपबोधकों को छात्रों की वरीयताओं और वर्जनाओं के संबंध में सूचना प्रदान करने में इनका उपयोग किया जाता है। इन परीक्षणों से छात्रों तथा उनकी समस्याओं के बारे में अधिक अच्छी जानकारी प्राप्त की जा सकती है।

2. परीक्षणाधीन छात्रों को उनकी अभिरुचियों की पहचान और स्पष्ट ज्ञान कराने के लिए इनका उपयोग होता है, ताकि आवश्यकतानुसार विभिन्न पाठ्यक्रमों से उनकी अभिरुचियों की संगति बिठाई जा सके, यानी वे अपनी अभिरुचि के अनुसार कार्यों और अनुभवों का चयन कर सकें।

3. अध्यापकों, उपबोधकों और माता-पिताओं को परीक्षार्थियों की अभिरुचियों का गहराई से ज्ञान कराने में इनका उपयोग किया जाता है ताकि शैक्षिक और व्यावसायिक योजनाएँ बनाते समय वे भी छात्रों की अभिरुचियों को ध्यान में रखते हुए उनकी सहायता कर सकें।

4. नवयुवकों की ऊर्जा को विभिन्न दिशाओं में संचरित करने में सहायता देने में इनका उपयोग होता है।

5. उपयुक्त कार्य के लिए उपयुक्त व्यक्ति के चयन में सहायता देने में भी इनका उपयोग है, जिससे असंतोष, निराशा तथा भग्नाशा से छात्रों की रक्षा की जा सके तथा उनकी उत्पादक क्षमता को बढ़ाया जा सके।

अभिरुचि परीक्षण की विधियाँ

व्यक्तियों की अभिरुचियों का मापन हम निम्नलिखित विधियों से कर सकते हैं :

1. **प्रेक्षण विधि :** इस विधि से हम व्यक्ति की प्रकटित अभिरुचियों का अवलोकन कर सकते हैं। कोई व्यक्ति वास्तविक रूप में क्या करता है, इससे उसकी अभिरुचियों का भली-भाँति संकेत प्राप्त होता है।

2. **उपबोधक का अभिमत :** किसी विषय, कार्य, ध्येय या व्यवसाय में अभिव्यक्त व्यक्ति विशेष की अभिरुचियों से उसकी पसंद का आभास मिलता है। मौखिक अभिमत अभिरुचियों के ज्ञापक हो सकते हैं।

3. **उपकरणों का उपयोग :** मिशीगन शब्दावली परीक्षण जैसे उपकरणों के प्रयोग द्वारा हम अभिरुचियों का पता लगा सकते हैं। यदि कोई व्यक्ति किसी खास विषय में वास्तविक अभिरुचि रखेगा तो वह उस रुचिपूर्ण क्षेत्र से संबंधित शब्दावली को अवश्य जानेगा। इसी आधार पर हम शब्दावली परीक्षणों द्वारा अभिरुचियों का पता लगाते हैं।

4. **अभिरुचि तालिकाओं के प्रयोग द्वारा :** व्यक्ति विशेष की अभिरुचियों का निश्चय हम व्यवसायों और क्रिया-कलापों की तालिकाओं पर उसके द्वारा की गई अनुक्रियाओं के आधार पर करते हैं। अभिरुचि तालिकाओं के माध्यम से व्यक्ति विशेष की वरीयताओं के बारे में अपेक्षाकृत अधिक स्थिर प्रकृति की सूचनाएँ उपलब्ध होती हैं; जो कि शाब्दिक अभिमतों के रूप में व्यक्त अभिरुचियों से प्राप्त नहीं हो पातीं। व्यवसायों के संबंध में गलत और सीमित ज्ञान से शाब्दिक अभिमत प्रभावित होता है। यह तकनीक अभिरुचियों के मापन के लिए सर्वाधिक प्रयुक्त उपाय है।

- **अभिरुचि-तालिकाओं के लाभ**

अभिरुचि तालिकाएँ कई प्रकार से उपयोगी हैं :

1. इनका उपयोग व्यावसायिक परामर्श के लिए अधिक किया जाता है। छात्र चाहता है कि उसकी अभिरुचियों पर ध्यान दिया जाए। जब छात्र की अभिरुचियों की व्याख्या की जाती है तो इस व्याख्या से उसे बहुत लाभ होता है; क्योंकि तब ऐसा लगता है, कि छात्र दर्पण

में स्वयं को देख रहा है, तथा जो कुछ उसने स्वयं कहा है, उसी का विश्लेषण वह प्राप्त कर रहा है।

2. अभिरुचि-तालिकाएँ उपबोधक के लिए भी उपयोगी हैं। इसलिए कि इनमें संवेगात्मक महत्व का पुट कम होता है। सेवार्थी अभिरुचि के प्राप्तांकों पर उपबोधक के साथ स्वतंत्रतापूर्वक विचार-विमर्श कर सकता है।

3. उपबोध्य के लिए भी इनकी उपयोगिता है। छात्र अपनी अभिरुचियों को प्रकट करने में संकोच नहीं करते और अपने प्राप्तांकों की जानकारी प्राप्त करने के लिए व्यग्र रहते हैं। उपबोधक के कार्यालय में छात्र को बुलाने का यह मधुर उपाय है। उसके प्राप्तांकों की व्याख्या करने का उसे इस प्रकार भरोसा दिलाया जाए कि उसमें किसी प्रकार की प्रताड़ना का कोई भय विद्यमान न रहने पाए।

4. ये मितव्ययी युक्तियाँ हैं। इन्हें किसी समूह को दिया जा सकता है। व्यक्ति वृत्तों की व्याख्या समूह-परिचर्चा के समय की जा सकती है।

5. इनसे प्रारंभिक जानकारी भलीभाँति उपलब्ध हो जाती है, जिसका उपयोग व्यवसाय के सामूहिक अध्ययन को आगे बढ़ाने अथवा व्यक्ति विशेष को परामर्श देने में किया जा सकता है।

6. छात्रों की बहुत सी अन्य समस्याओं का निपटारा करने में ये तालिकाएँ उपबोधक की सहायता करती हैं।

अभिरुचि तालिकाओं की सीमाएँ

अभिरुचि तालिकाओं में कुछ कमियाँ पाई जाती हैं :

1. अभिरुचि तालिका आधारित प्रश्नोत्तरों से कुछ छात्रों की गहरी पसंद अथवा नापसंद का पता नही चल पाता या कहें उनकी सुनिश्चित वरीयताओं का स्पष्ट संकेत नहीं मिल पाता।

2. इन अभिरुचि तालिकाओं का प्रयोग उन्हीं व्यक्तियों के लिए वैध हो सकता है, जिनकी पसंद का दायरा काफी बड़ा तथा विभिन्न प्रकार का है, जिनसे उनको उस प्रकार का अनुभव प्रदान किया गया है जिसके द्वारा वे विकल्पों में से एक को चुनने के योग्य हो सकेंगे। ये विकल्प तालिका के प्रत्येक घटक द्वारा दर्शाए हुए होते हैं। इस प्रकार इन तालिकाओं का प्रयोग अपरिपक्व छात्रों की अपेक्षा परिपक्व छात्रों के लिए अधिक उपादेय हैं।

3. केवल तालिकाओं में दर्शाए गए प्रतिमानों के आधार पर, भले ही वे सुपरिभाषित ढंग से प्रस्तुत किए गए हों; व्यावसायिक पसंद या सफलता के बारे में भविष्य कथन नहीं किया जा सकता। योग्यता, प्रशिक्षण तथा प्रशिक्षण हेतु अवसर - इन सभी बातों पर विचार करना होगा। अभिरुचि-परीक्षण के परिणामों पर आवश्यकता से अधिक निर्भर नहीं रहा जा सकता।

अभिरुचियों का पूर्वानुमान

अभिरुचियों की जाँच का एक तरीका यह है कि व्यक्तियों से यह पूछा जाए कि वे क्या करना पसंद करते हैं। दूसरा तरीका यह है कि व्यक्ति जिन कार्यकलापों में लगा होता है उनका विश्लेषण किया जाए। अभिरुचियों का पता लगाने की तीसरी विधि यह है कि अभिरुचि-परीक्षणों और तालिकाओं का प्रयोग करके उनका पता लगाया जाए। आजकल कई अन्य ऐसी युक्तियाँ भी प्रचलन में हैं जिनसे व्यावसायिक अभिरुचियों का पूर्वानुमान लगाया जा सकता है।

1. **कूडर अभिरुचि तालिकाएँ :** कूडर अभिरुचि तालिकाओं के कई प्रकार, भाषान्तर तथा संस्करण उपलब्ध हैं। ये अभिरुचियों को भिन्न-भिन्न दृष्टिकोणों से मापने में सहायक सिद्ध होती है। इनकी रचना भिन्न-भिन्न उद्देश्यों के लिए की गई है। कूडर तालिका में दिए गए

प्रश्न (घटक) दबावयुक्त पसंद का परीक्षण करने वाले हैं। सूचीबद्ध किए गए प्रत्येक तीन कार्य-कलापों के लिए उत्तरदाता संकेत करता है कि वह किसे सर्वाधिक पसंद करेगा और किसे सबसे कम।

कूडर अभिरुचि तालिकाओं के बहु प्रचलित रूप निम्नलिखित हैं :

i) **कूडर व्यावसायिक प्राथमिकता अभिलेख** : इसके अंतर्गत 10 अभिरुचि मापनियाँ तथा एक ऐसी पुष्टि करने वाली मापनी होती है, जिससे लापरवाही, गलतफहमी तथा सामाजिक रूप से तो वांछित पसंद पर उत्तर नापसंदगी, इत्यादि बातों का पता लगाया जाता है। इन अभिरुचि मापनियों के रूप में ये हैं : बाह्य मापनी, यांत्रिक मापनी, संगणनीय मापनी, वैज्ञानिक मापनी, प्रेरक मापनी, कला मापनी, साहित्य मापनी, संगीत मापनी, समाज सेवा मापनी तथा लिपिकीय, योग्यता मापनी। इनमें दबावयुक्त पसंद सूचक प्रश्नों का समावेश किया जाता है। इनमें उत्तरदाता यह बताते हैं कि वे तीन कार्य-कलापों में से किसको सर्वाधिक पसंद करेंगे और किसको सबसे कम। प्राप्तांक विशिष्ट व्यवसायों के लिए नहीं होते हैं, वे 10 व्यापक अभिरुचि क्षेत्रों के लिए होते हैं।

ii) **कूडर सामान्य अभिरुचि सर्वेक्षण** (KGIS) कूडर व्यावसायिक प्राथमिकता अभिलेख का ही यह पुनरीक्षित और अधोगामी विकसित रूप है। इसे 6 से 12 तक की कक्षाओं के लिए तैयार किया गया है। इसमें सरल भाषा और सुबोध शब्दावली का प्रयोग हुआ है। वस्तुतः यह 'स्ट्रांग व्यावसायिक अभिरुचि ब्लैंक' का ही परिवर्तित रूप है।

iii) **कूडर की व्यावसायिक अभिरुचि तालिका** (KOIL) इस तालिका की परिधि में आने वाले व्यवसाय स्तरानुसार छोटे से बड़े तक हैं। जैसे - बिस्कुट बनाने वाले से लेकर ट्रक ड्राइवर, केमिस्ट तथा वकील तक।

2. **स्ट्रांग व्यावसायिक अभिरुचि ब्लैंक** (SVIB) यह इस धारणा पर आधारित है कि यदि कोई व्यक्ति किसी व्यवसाय विशेष में विशिष्ट सफल व्यक्तियों के अनुरूप प्रमुख अभिरुचियों का प्रदर्शन करे तो वह उस व्यवसाय में सन्तोष और प्रसन्नता का अनुभव करेगा।

बोध प्रश्न

टिप्पणी : क) अपने उत्तरों के लिए नीचे दिए गए स्थान का प्रयोग कीजिए।

ख) इस खंड के अंत में दिए गए उत्तरों से अपने उत्तर मिलाइए।

9. अभिरुचि तालिकाओं के किन्हीं दो लाभों तथा उनकी दो सीमाओं का उल्लेख कीजिए।

....

....

....

....

....

....

5.5.4 व्यक्तित्व परीक्षण

व्यक्तित्व में व्यक्ति की शारीरिक, सामाजिक, संवेगात्मक (भावात्मक) तथा वैयक्तिक - सभी प्रकार की विशेषताओं का समावेश है। अतएव व्यक्तित्व किसी व्यक्ति विशेष के सामाजिक परिवेश में प्रकट हुए व्यवहार का योगफल है। व्यवहार के अंदर आप समग्र व्यक्ति के रूप में समाहित हैं। इसमें आपके बारे में सब कुछ है - आपका चेहरा-मोहरा, आपके केश, आपके दाँत, आपके नेत्र, आपकी चाल-ढाल, आपका खड़े होने का ढंग, आपकी बातचीत का ढंग, आपके सारे तौर-तरीके, आपकी विशेषताएँ, आपकी आदतें, आपके सोचने का ढंग यानी आपके बारे में सब कुछ।

व्यक्तित्व-परीक्षण का उद्देश्य

निम्नलिखित उद्‌देश्यों की पूर्ति के लिए व्यक्तित्व परीक्षण करना आवश्यक है :

1. इससे विद्यार्थियों को शैक्षिक एवं व्यावसायिक चुनाव करने में सहायता मिलती है। वैयक्तिक, निजी, शैक्षिक एवं व्यावसायिक समायोजन करने और सफलता प्राप्त करने में व्यक्तित्व की अहम भूमिका होती है। अतएव यह आवश्यक है कि हम व्यक्ति विशेष के व्यक्तित्व के रंगढंग का निदान करें और देखें कि क्या उस व्यक्ति-विशेष में वे सभी शीलगुण मौजूद हैं जो उसके पाठ्यक्रम चयन के साथ या व्यवसाय-चयन के साथ महत्वपूर्ण समायोजन करने में सहायक हैं?

2. इसकी सहायता से भावात्मक अंतर्द्वंद्वों का समाधान करने में आसानी रहती है। उस समय व्यक्तित्व-निदान करना अत्यावश्यक हो जाता है जब व्यक्ति-विशेष शैक्षिक और व्यावसायिक चयन करते समय उपयुक्त समायोजन संबंधी कठिनाई का अनुभव करता है। यह कठिनाई संवेगात्मक अंतर्द्वंद्व के रूप में होती है जिसकी सेवार्थी को कोई जानकारी ही नहीं होती। जब व्यक्ति विशेष के मानसिक अंतर्द्वंद्व के कारणों का निदान हो जाता है तो फिर उसके लिए यह संभव होता है कि वह अपने ढंग से अपनी समस्या को हल कर सकता है।

3. यह अध्यापक और उपबोधक - दोनों की ही सहायता करता है। विभिन्न प्रविधियों से किया गया व्यक्तित्व परीक्षण अध्यापक और उपबोधक - दोनों को ही वे सूचनाएँ प्रदान करता है, जिनके आधार पर उस व्यक्ति विशेष को सहायता दी जा सकती है।

4. इसकी सहायता से नियोक्ता उपयुक्त कर्मचारी का उचित चयन कर सकता है।

5. इससे चिकित्सा-मनोवैज्ञानिक को भी सहायता मिलती है। व्यक्तित्व-परीक्षण का उपयोग वह अपने सेवार्थी के हित में सर्वश्रेष्ठ चिकित्सा-प्रणाली सुझाने के लिए कर सकता है।

व्यक्तित्व-परीक्षण की तकनीकें

व्यक्तित्व-परीक्षण के लिए कई प्रकार की तकनीकें प्रचलन में हैं। ये हैं :

- साक्षात्कार
- प्रेक्षण
- आत्म-निर्धारण तथा व्यक्तित्व तालिकाएँ
- जाँच-सूची
- निर्धारण-मापनी
- परिस्थितिजन्य परीक्षण तथा व्यवहारगत परीक्षण
- प्रक्षेपण प्रविधियाँ
- वृत्तांत अभिलेख
- आत्मकथा
- दैनन्दिनी

साक्षात्कार, प्रेक्षण, निर्धारण मापनी, वृत्तांत अभिलेख तथा आत्मकथा आदि की खंड 5.4 में मार्गदर्शन की अमानकीकृत प्रविधियाँ शीर्षक के अंतर्गत चर्चा की जा चुकी है। अन्य प्रविधियों का विवरण आगे दिया जा रहा है।

जाँच-सूची

व्यक्तित्व का अध्ययन करने के लिए महत्वपूर्ण उपागम के रूप में छात्रों की अनुभूत समस्याओं को सूचीबद्ध किया जाता है। इस सूची का उपयोग उपबोधन के लिए सहायक सामग्री के रूप में अथवा छात्र समुदाय की चिंताओं का सर्वेक्षण करने में किया जाता है। द्वितीय उद्देश्य के लिए इनकी पूर्ति बेनामी तौर पर की जा सकती है। एक समस्यामूलक जाँच-सूची अथवा तालिका मूलरूप से उन समस्याओं की सूची होती है जो अध्ययनाधीन उस आयु वर्ग के छात्र समुदाय के लिए एक समान होती है। जो विद्यार्थी तालिका में अंकन कर रहा है, वह यह इंगित करता है कि इन समस्याओं में से कौन-सी समस्याएँ उनको आंदोलित कर रही हैं। यद्यपि कई कारणों से वह विद्यार्थी यह स्वीकार करने को राजी नहीं होगा कि कोई समस्या उसे आक्रांत कर रही है, किंतु यदि इन जाँच-सूचियों की उचित व्याख्या की जाए तो इससे उपबोधक को पर्याप्त रुचिकर और सहायक आधार-सामग्री प्राप्त हो जाती है। इनसे कई ऐसी समस्याएँ उभरकर सामने आती हैं जिनके बारे में अब तक संदेह करने की गुंजाइश भी नहीं थी। कुछ उदाहरण तो ऐसे होंगे जिनसे समस्याओं के प्रच्छन्न कारणों का उद्घाटन हो जाएगा। उपबोधन/उपबोधक हेतु लिए गए साक्षात्कार की आधारभूमि के रूप में इनका सर्वाधिक महत्व है।

प्रक्षेपी प्रविधि

पूर्वोक्त मापन प्रविधियों के विपरीत व्यक्तित्व के अध्ययन के लिए व्यापक उपागम द्वारा सम्पूर्ण व्यक्तित्व का अध्ययन किया जाता है। इस तरीके को प्रायः प्रक्षेपी प्रविधि कहा जाता है, क्योंकि परीक्षण के लिए प्रदत्त अभ्यासों में व्यक्ति-विशेष अपने व्यक्तित्व का प्रक्षेपण करने हेतु उत्प्रेरित होता है। प्रक्षेपी प्रविधि में जिन उत्प्रेरकों का प्रयोग होता है उनसे व्यक्ति के अंतर मे छिपे ऐसे अभिप्रेरकों और व्यक्तित्व विशेषकों का प्रक्षेपण प्रतिक्रियाओं की अभिव्यक्ति के रूप में बाहर होता है जिनका अंदाजा स्वयं व्यक्ति विशेष को भी नहीं होता। अध्ययनाधीन व्यक्ति को चित्रों की श्रृंखलाओं और स्याही के धब्बों के चित्रों अथवा उसी प्रकार के अस्पष्ट उद्दीपकों को दिखाकर उन पर अपनी अनुक्रिया अंकित या अभिव्यक्त करने को कहा जाता है। प्रत्युत्तरों की व्याख्या करने के लिए दीर्घकालीन प्रशिक्षण की आवश्यकता है। यह कार्य केवल उन्हीं लोगों के द्वारा किया जाना चाहिए जो विशेष रूप से इस कार्य में दक्षता प्राप्त हों।

आत्म-निर्धारण तथा व्यक्तित्व तालिकाएँ (पैंसिल और कागज़ द्वारा व्यक्तित्व परीक्षण) किसी व्यक्ति विशेष द्वारा अपने भूतकालीन व्यवहार, भावनाओं और इच्छाओं का लिखित ब्यौरा उसके व्यक्तित्व के बारे में प्राप्त सूचनाओं का महत्वपूर्ण स्रोत हो सकता है। स्वयं का निर्धारण व्यक्तित्व तालिकाओं तथा कागज-पैंसिल परीक्षणों द्वारा किया जा सकता है। बाद में साक्षात्कार के आधार के लिए ये दोनों विधाएँ अधिक उपयोगी सिद्ध होती हैं।

कागज-पेंसिल के उपयोग से किए जाने वाले व्यक्तित्व परीक्षण की सीमाएँ :

1. इन तालिकाओं के अधिकांश प्रश्न व्यक्ति के निजी जीवन से संबंधित होते हैं।

2. अध्ययनाधीन व्यक्ति के अचेतन मन के अवरोध बहुत सीमा तक उसके प्रत्युत्तरों को प्रभावित करते हैं। फिलिप ई.वर्नन के अनुसार "लोग वस्तुतः अपने-आपको पूर्ण रूप से नहीं जानते, इसलिए वे बहुत से प्रश्नों का सही-सही उत्तर नहीं दे पाते। उनके उत्तर अधिकतर अन्यथा सिद्ध युक्ति (यौक्तिकरण) मण्डित और न चाहते हुए भी आत्म प्रवंचनायुक्त होते हैं।" सही और वैध सूचना प्राप्त करना बहुत कठिन होता है।

3. वैधता से छेड़छाड़ करने में सुझाव महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। भावात्मक रूप से उद्विग्न करने वाले अनुभवों को स्मरण रखना मिथ्या प्रतीत हो सकता है। यह प्रायः होता है कि सुझावात्मक प्रश्न हमें ऐसे अनुभवों को स्वयं का मानकर स्वीकार करने के लिए प्रेरित करने लगते हैं जिनका अनुभव हमने पहले कभी नहीं किया होगा।

4. अस्थायी मनोदशा, आशावादिता, चिंता इत्यादि का प्रभाव परीक्षण उत्तरों को प्रभावित कर सकता है।

परिस्थितिजन्य अथवा व्यवहारपरक परीक्षण

यह एक ऐसा परीक्षण है जिसमें व्यक्ति-विशेष के व्यवहार का मूल्यांकन कार्य स्थितियों में निर्णायकों द्वारा अथवा उसके साथियों द्वारा किया जाता है, अथवा स्वयं उसके जीवन से संबंधित परिस्थितियों से उसका सामना कराया जाता है। इसकी प्रतिक्रिया के रूप में वह दूसरे व्यक्तियों के सामने अपनी भावनाओं की अभिव्यक्ति करके उत्तर देता है। अध्ययनाधीन व्यक्ति दूसरों के साथ संपर्क के संबंध में पक्ष या विपक्ष की अपनी प्राथमिकताओं का कथन करके अपने व्यक्तित्व विशेषकों को प्रकट करता है। जीवन की परिस्थितियाँ जिनका वह सामना करता है तथा उनके साथ सहज विधि से किस प्रकार वह व्यवहार करता है, उससे भी व्यक्तित्व के गुणों का प्रकाशन होता है। मनो-अभिनय तथा सामाजिक अभिनय ये दो इस प्रकार की तकनीकें हैं।

जेनिंग्स के अनुसार - "सामाजिक अभिनय" समूह के सदस्यों के अनुभवों के प्रति सामान्य चेतना के माध्यम से एक गहन और जीवन्त तकनीक है। उन अनुभवों को यदि प्रकाशन का अवसर नहीं मिले तो जीवन में दमित संवेगात्मक प्रभाव से समस्याएँ बिना समाधान के रह जाती हैं। सामाजिक अभिनय की प्रक्रिया व्यक्ति विशेष के संसाधनों को सहज व्यवहार की दिशा में प्रवृत्त करने में सहायक सिद्ध होती है तथा उसकी अभिव्यक्ति करने की शक्तियों को प्रकट करने वाली होती है। मनो-अभिनय के अंतर्गत "इस प्रकार की परिस्थिति का निर्माण किया जाता है, जिसमें समूह के कुछ चुने हुए सदस्य उसके दृष्टा होते हैं।"

मनो-अभिनय शब्द से अभिप्राय है कि व्यक्ति-विशेष को स्वतः स्फूर्त रूप से विशिष्ट परिस्थिति में भूमिका का निर्वाह करना होता है। उसके व्यवहार का अवलोकन प्रशिक्षित प्रेक्षक करते हैं। ऐसा माना जाता है कि व्यक्ति-विशेष अपने अंदर के भावों और अंतर्द्वंद्वों को अभिनय के समय प्रक्षेपित करता है।

दैनन्दिनी

छात्रों द्वारा लिखी जाने वाली दैनिक डायरी भी व्यक्तित्व के मापन की प्रविधि के रूप में कार्य करती है। यद्यपि दैनिक डायरी नितान्त व्यक्तिगत प्रकार की होती है, तथापि उसमें इस प्रकार की घटनाओं, विचारों और भावनाओं का लेखा-जोखा होता है, जिसका छात्र के लिए अत्यधिक

महत्व है। यदि दैनन्दिनी ठीक ढंग से लिखी जाती रहे और उसका रखरखाव ठीक प्रकार से किया जाए; तो वह व्यक्ति-विशेष के व्यक्तित्व के अनेकों पक्षों पर प्रकाश डालने का उपयोगी माध्यम बन सकता है। चूँकि इसमें हर घड़ी का लेखा-जोखा लिखा होता है इसलिए यह छात्र के जीवन के सामान्य ढर्रे पर प्रकाश डालने के लिए मूल्यवान साधन है। इससे उन कार्यकलापों पर भी प्रकाश पड़ता है जिनमें वह रह रहा है या जिनमें उसकी विशेष रुचि रही है।

बोध प्रश्न

टिप्पणी : क) अपने उत्तरों के लिए नीचे दिए गए स्थान का प्रयोग कीजिए।

ख) इस खंड के अंत में दिए गए उत्तरों से अपने उत्तर मिलाइए।

9. व्यक्तित्व-परीक्षण के किन्हीं दो उद्देश्यों का संक्षेप में वर्णन कीजिए व्यक्तित्व परीक्षण की किन्हीं पाँच प्रविधियों की सूची बनाइए?

....

....

....

....

5.6 सारांश

सभी प्रकार के निर्देशनों का उद्देश्य अपने बारे में तथा अपने परिवेश के बारे में अध्येता को पर्याप्त जानकारी प्राप्त कराने में सहायता प्रदान करना है, ताकि वह विद्यालय और समुदाय में उपलब्ध शैक्षिक अवसरों का अत्यधिक बुद्धिमत्तापूर्वक उपयोग करने में सक्षम हो सके। निर्देशन व्यक्ति विशेष को दी जाने वाली एक ऐसी सहायता है जिसके द्वारा वह बुद्धिमत्तापूर्ण चुनाव करता है और अपने जीवन में सुसमायोजन बनाए करता है। बुद्धिमत्तापूर्ण चुनाव करने की योग्यता जन्मजात नहीं होती, इसका विकास करना पड़ता है। निर्देशन का आधारभूत उद्देश्य यह है कि प्रत्येक व्यक्ति अपनी-अपनी क्षमता के अनुसार ऐसी योग्यता विकसित कर ले जिससे वह अपनी समस्याएँ खुद हल कर सके और अपना समायोजन ठीक से कर सके। व्यक्ति से संबंधित आधारभूत आँकड़ों/ सूचनाओं का संकलन करने की वे तकनीकें, जिन्हें निर्देशक प्रायः उपयोग में लाते हैं, वे हैं : मानकीकृत अथवा अमानकीकृत प्रविधियाँ। अमानकीकृत तकनीकों के अंतर्गत हैं - साक्षात्कार, निर्धारण मापनी, प्रश्नावली, प्रेक्षण, समाजमिति, जीवनी/ आत्मकथा, संचयी-वृत्त तथा वृत्तांत-अभिलेख। मानकीकृत तकनीकों में हैं - अभिरुचि, बुद्धि, अभिक्षमता तथा व्यक्तित्व के विशेषकों/ शीलगुणों के मापने के उपकरण।

5.7 अभ्यास कार्य

1. माध्यमिक स्तर के दस छात्रों को एक ऐसी प्रश्नावली भरने को दीजिए जो कि माध्यमिक स्तर के छात्रों को पढ़ाए जाने वाले किसी विषय पर आधारित हो। उनके उत्तरों को जाँचिए। फिर विद्यालयी शिक्षा में प्रश्नावली की आवश्यकता और उसके महत्व पर प्रकाश डालते हुए एक प्रतिवेदन तैयार कीजिए?

2. कक्षाध्यापन में उपलब्धि परीक्षण तथा अभिक्षमता परीक्षण के उपयोग पर विस्तार से चर्चा कीजिए तथा उसके समर्थन में उपयुक्त उदाहरण भी दीजिए।